

आमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

मार्च - II - 2023



अंक - 24

माउण्ट आबू

Rs.-12

शुभारंभ : ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के अभियान का प्रधानमंत्री ने किया वर्चुअल शुभारंभ

प्रधानमंत्री ने कहा - जल बचाने के साथ उन विकृतियों को भी दूर करना होगा, जो जल प्रदूषण को बढ़ाती हैं



शांतिवन । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक संस्थाओं की जल अभियान में बड़ी भूमिका है। बीते दशकों में हमारे यहां एक नकारात्मक सोच बन गई थी कि हम जल संरक्षण और पर्यावरण जैसे विषयों को मुश्किल मानकर छोड़ देते थे। यह सोचते थे कि यह काम नहीं किया जा सकता। बीते आठ साल में यह मानसिकता बदली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान के आबू रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन के डायमण्ड हॉल में 'जल जन अभियान' का वर्चुअल शुभारंभ करते हुए कहा कि 'नमामि गंगे' अभियान, आज देश के विभिन्न राज्यों के लिए एक मॉडल बनकर उभरा है। आज न केवल

ब्रह्माकुमारीज़ और भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा चलाया जाएगा 'जल-जन अभियान'

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, जब भी मैं ब्रह्माकुमारीज़ के बीच आता हूँ, आपका स्नेह और अपनापन मुझे अभिभूत कर देता है। मेरा सम्बंध आपसे इसलिए भी खास है क्योंकि स्व से ऊपर उठकर सर्वस्व समर्पित करना आप सभी के लिए आध्यात्मिक साधना का स्वरूप रहा है। आप सबके बीच आना, सीखना, समझना हमेशा से मेरे लिए एक सुखद अनुभव रहा है।

08 माह तक देशभर में चलाया जाएगा जल जन अभियान

10 लाख भाई-बहनें बनेंगे अभियान के सारथी

10 हजार कार्यक्रम करने का रखा लक्ष्य

10 करोड़ लोगों तक जागरूकता संदेश पहुंचाने का लक्ष्य

5000 जलाशय, कुएं, बावड़ी के संरक्षण का लक्ष्य

50 हजार गीता पाठशालाएं जुड़ेंगी

गंगा साफ हो रही है बल्कि उनकी तमाम सहायक नदियां भी स्वच्छ हो रही हैं। गंगा के किनारे प्राकृतिक खेती जैसे अभियान भी शुरू हुए हैं।

जल रहेगा तभी कल रहेगा

मोदी ने कहा कि आज़ादी के अमृत काल में आज देश जल को कल के रूप में देख रहा है। जल रहेगा, तभी आने वाला कल भी रहेगा। इसके लिए हमें मिलकर आज से ही प्रयास करने होंगे। उन्होंने संतोष जताते हुए कहा कि जल संरक्षण के संकल्प को देश अब एक जन अभियान के रूप में आगे बढ़ा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ये अभियान एक ऐसे समय में शुरू हो रहा है, जब

हवा, पानी जो परमात्मा ने हमें दी है उसकी कदर करना सीखें



सुप्रसिद्ध अभिनेता पद्मश्री नाना पाटेकर ने कहा कि मैं आज गांव में रहता हूँ लेकिन जब किसी काम से शहर जाना होता है तो मेरा दम घुटने लगता है। हमें आबादी बढ़ने से रोकना होगा, क्योंकि हमारे पास संसाधन सीमित हैं। पानी के बिना जीवन अधूरा है। जो चीज़ हमारे पास है उसकी कीमत नहीं है। वेंटीलेटर पर दो दिन रहे तो हम सात लाख का बिल भर देते हैं लेकिन हवा, पानी जो हमें भगवान ने फ्री में दिया है उसकी हम वैल्यू नहीं कर रहे हैं। मेरा प्रयास रहेगा कि अपने स्तर पर मैं जल संरक्षण की दिशा में जो कुछ कर सकूँ, वो कार्य मैं अवश्य करूँगा।



50 साल पूर्व प्रति व्यक्ति 5000 क्यूबिक पानी था जो आज 1500 क्यूबिक मीटर ही मात्र रह गया : गजेंद्र सिंह शेखावत

केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि हम दुनिया में तेज़ी से बढ़ने वाली आबादी हैं। हम मानसून के सिर्फ 40-42 दिन बारिश के पानी पर सारा साल निर्भर होते हैं। हम बारिश से मात्र 300 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी ही रोक पा रहे हैं। वर्तमान में देश में 750-800 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी की आवश्यकता है। पचास साल पहले हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति के लिए 5 हजार क्यूबिक मीटर पानी उपयोग के लिए उपलब्ध रहता था जो आज घटकर 1500 क्यूबिक मीटर रह गया है। दुनिया में जितना पीने योग्य पानी है उसका चार फीसदी पानी ही भारत में है और दुनिया की 18 फीसदी आबादी है।

पानी की सुरक्षा में ही भविष्य सुरक्षित: युवराज लक्ष्यराज सिंह



यदि हमें विश्व पर राज करना है तो सभी को फिर से एक होने की ज़रूरत है।

उदयपुर से आये मेवाड़ घराने के महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने उस समय जल संरक्षण के लिए कई उपाय किए। 21वीं शताब्दी हिंदुस्तान की होगी। लेकिन उसका रास्ता और कहीं से नहीं इसी सोच से गुज़रता है। ब्रह्माकुमारीज़ और जलशक्ति मंत्रालय जो काम कर रहा है वह दुनिया को बनाने का काम है।

पवित्रता... आपकी पर्सनैलिटी

आज भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, रंग होते हुए भी एक बात से सभी सहमत हैं चाहे वो धर्मसत्ता हो चाहे कोई और। चारों ओर दुःख-अशांति, प्राकृतिक आपदाओं के माहौल के मध्य भी सबकी अंगुली ऊपर की ओर जाती और कहते हैं कि 'हे ऊपर वाले बचाओ'। सब एक बात से तो सहमत हैं कि कोई न कोई सर्वोच्च सत्ता है जिससे हम सबका कहीं न कहीं रिश्ता-नाता है। और हमारे जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकताएं उसी ने ही पूरी की हैं। तब तो सबका सिर ऊंचा होता और पुकारते कि अब बहुत हो गया! अब इस धरा पर आ जाओ और हमें सही राह दिखाकर चैन की दुनिया में ले चलो।

अगर वो आ भी जायेगा तो हमें क्या देगा? क्या शिक्षा देगा जिससे हमारे जीवन में सुख और शांति लौट आये? विशेष बात आज हम जो दुःखी हैं, उसका मूल कारण ढूंढने से पता चलता है कि कहीं न कहीं हमारे जीवनशैली में, परस्पर सम्बंधों में, व्यवहार में अशुद्धि की छाया व्याप्त है।



ब.कु. गंगाधर

हम सभी की यह चाह है कि इसमें परिवर्तन हो, बदलाव हो। पर बदलाव कैसे होगा, वहां आकर हम सभी रुक जाते। क्योंकि मनुष्य मात्र का यह कार्य रहा ही नहीं। अगर मनुष्य यह कार्य कर सकता तो हमें ऊपर वाले की याद ही क्यों आती!

हमने शास्त्रों में भी पढ़ा है, 'सुख-शांति की जननी पवित्रता है'। आज हर कोई सुख, शांति, खुशी की चाह रखता है पर हमारे जीवन में इसका स्थायित्व कैसे हो, ये नहीं जानते। पर जैसे कहा कि जहाँ पवित्रता और शुद्धता है वहाँ परमात्मा का वास है। सब कोई सुख, शांति, आनंद, प्रेम मांगता, पर कोई ये नहीं मांगता कि हमारे जीवन में पवित्रता हो। जबकि पवित्रता बिना न प्यार है, न प्रेम है, न शांति।

आज हम अशांति और दुःख के कारण को जड़ से समाप्त करना तो चाहते हैं पर पवित्रता को अपनाने में हमें कठिनाई महसूस होती है। क्योंकि हमारे सामने कोई ऐसा आदर्श नहीं है जहाँ पवित्रता भी हो और जीवनचर्या भी हो। और शर्त ये है कि पवित्रता है तो बाकी सब कुछ है। इसीलिए परमात्मा शिव की इस धरा पर आवश्यकता है ताकि हमें सही व श्रेष्ठ जीवनचर्या का वर दें। और हमें जागृत करें कि पवित्रता का महत्त्व हमारे जीवन में कितना है! पवित्रता से ही जीवन में प्रसन्नता रहती है। बिना पवित्रता प्रसन्नता नहीं। पवित्रता से प्रभु का प्यार भी है और प्रभु का दिया हमें उपहार भी।

आप सोचें, कोई भी महान व्यक्ति व देवी-देवताओं के पास जाते हैं, उनके चित्र देखते हैं तो उनके चेहरे से हमारे चेहरे में भिन्नता महसूस होती है। एक घड़ी भी आप देवी-देवता के चित्र या मूर्ति को ही देखें तो आपको लगेगा कि उनके चेहरे में जो मधुर स्मित की खुशबू है वो हमारे में नजर नहीं आती। यानी कि हमारे मन में उलझन है, प्रश्न है, इच्छाएँ हैं, ईर्ष्या है, कहीं न कहीं अप्रामियाँ हैं। तभी तो मन में प्रश्न उठता ही रहता है और मन की बेचैनी बनी ही रहती। तो सभी प्रश्नों का हल, सभी समस्याओं का समाधान, अशांति के कारण, दुःख का हल अगर एक शब्द में बाँधें तो वो है पवित्रता। परमात्मा शिव जब इस धरा पर आते हैं तो सबसे पहले सर्व आत्माओं को पवित्रता का वर देते हैं और स्मृति दिलाते हैं, याद दिलाते हैं, आप सबका निज-स्वरूप पवित्रता है। समय चलते भिन्न-भिन्न आकर्षण, इच्छाएँ व भोग के वश आपकी पवित्रता का बल लगभग पूरा ही समाप्त हो चुका। जब अपनी चीज गुम हो जाती तो बेचैनी होती है ना! और जहाँ बेचैनी है वहाँ शांति, सुख नहीं भासता। आज हम आपको यही बताना चाहते हैं कि हम अपने जीवन में पवित्रता के महत्त्व को जानेंगे, समझेंगे और जीवन में उतारेंगे तो सुख, शांति और समृद्धि परछाई की तरह आपके साथ रहेगी, कभी भी अलग नहीं होगी। 2023 की शिवरात्रि विशेष रूप में खास है, क्योंकि परमात्मा हमें सबकुछ देने भी आया है और यह संदेश भी लाया कि, बहुत हो गया अब, बच्चे बहुत हो गया। अब, खेल समाप्त हो रहा, अब चलो अपने घर। पवित्रता अपनाओ, सुख-शांति पाओ। अब आप क्या चाहते हैं, ये आप पर छोड़ते हैं...।

ड्रामा का फुलस्टॉप लगाकर बुद्धि को डिस्टर्ब न होने दें

बुद्धि के अभिमान का त्याग, सेवा का त्याग, साथियों का त्याग, अंदर से हुआ पड़ा हो। लेकिन कोई त्यागी माना वैरागी नहीं है। हम आपस में इतने प्यारे भी हैं। बाबा ने कहा है कि हम अकेले आये, अकेले जाना है...लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम अकेले मौज करें। यह भी ठीक नहीं। परिवार भी साथ में है। बाबा का बच्चों से प्यार कितना है। कितना प्यार से बाबा आते, हम बच्चों को सजाते, हम बच्चों का भी फिर इतना ही बाबा से प्यार है, इसमें बाबा सर्टिफिकेट देते हैं। मुरली से, सेवा से तो नम्बरवन प्यार है, लेकिन धारणाओं से भी नम्बरवन प्यार हो। सामने देखने वाले हमारी धारणाओं को देखते हैं। तो धारणा भी नम्बरवन चाहिए। हम सभी की पहली धारणा है-पावन बनना। काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करना। बाबा के सिवाए कोई यह दावा नहीं करता कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को पावन बनाने। अगर इसी सब्जेक्ट में आप नम्बरवन विजयी हो तो आप सबसे महान हो। इसके लिए दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, व्यवहार सबमें बिल्कुल पावन बनो। ऐसे पावन रहो

जो दूसरों को भी पावन बनने की प्रेरणा मिल जाए। इसी में ही माया आती। इसी माया को जीतना ही मायाजीत बनना है। कई बार हम आप सबका दिल से यह गुण गाती कि आपने एक बाबा से वायदा रखा है कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में बाबा को बसाया है। परंतु जब कोई कहाँ थोड़ा भी किसी की अटैचमेंट में आते तो 5 मंजिल से नीचे गिर पड़ते। जब कोई 5वीं मंजिल से गिरता है तो रहम पड़ता,



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

तरस पड़ता है, इसके लिए मर्यादाओं को सदा साथ रखो। बाबा ने हम सबको ज्ञान दिया है कि हम आत्मायें भाई-भाई हैं। परंतु यह नॉलेज है कि आत्मा भाई है, दृष्टि भाई की हो लेकिन व्यवहार भाई-बहन का हो। ऐसे नहीं बहन को कहो- आओ भाई जी। व्यवहार में ईश्वरीय मर्यादाओं का नियम रखना पड़ता। अगर नियमों में

पक्के रहो तो कभी 5वीं मंजिल से नहीं गिरेंगे। अगर कोई गिरता है तो पहले मर्यादा का किसी-न-किसी प्रकार से उल्लंघन करता है। वैसे तो बाबा ने हमें बहुत रमणीक गुह्य ज्ञान दिया है, हम उसी में मस्त रहें। लेकिन यह परिवार है, परिवार में हम सभी मिलकर रहते हैं, यह क्लास है। क्लास में एक तरफ भाई, दूसरी तरफ बहनें बैठती,

नीति में प्रीति रखो। नियम-संयम को जीवन का शृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे।



यह भी मर्यादा है। बाबा कहते-आपस में रूहरिहान करो तो यह रूहरिहान क्लास के लिए दी गई है। ऐसे नहीं हम अकेले में बैठकर रूहरिहान करें। माया देखती रहती है कि कहाँ से खिड़की खुली हुई है, उसी जगह से वह प्रवेश करती है। तो माया को आने का मौका न दो क्योंकि अकेले में बैठकर रूहरिहान करेंगे तो थोड़ी-थोड़ी दिल

की लेन-देन शुरू हो जायेगी। ऐसे में माया अंदर घुस जायेगी। यह है माया का दरवाजा इसलिए नीति में प्रीति रखो। नियम-संयम को जीवन का शृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे। बाबा ने कभी एक साथ टेबल पर बैठकर भाइयों को खाने की छुट्टी नहीं दी, टेबल पर हँसी-मजाक करने की छुट्टी नहीं दी। यह छोटी-छोटी बातें भी ध्यान पर रखना बहुत जरूरी है। भल हम आत्मा भाई-भाई हैं, नॉलेज है हम बिन्दु हैं लेकिन नॉलेज के साथ मर्यादायें भी रखना जरूरी है।

अपनी स्व-स्थिति की उन्नति का आधार है ड्रामा। ड्रामा कहा माना फुलस्टॉप आया। एक सेकण्ड बीता फुलस्टॉप। यह ऐसी नॉलेज है जो अपने को सदा निश्चित रख सकते हैं। ड्रामा की नॉलेज ही हमें निर्मोही बनाती है। हर एक का अपना-अपना पार्ट है, इसलिए किसी के पार्ट से फीलिंग नहीं आती। हरेक की अपनी विशेषता है, अपनी खूबी है। वह गुण देखो, विशेषता देखो तो संस्कार नहीं टकरायेंगे। जो कई बार थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता, बुद्धि डिस्टर्ब होती—ड्रामा का फुलस्टॉप लगाकर अपनी बुद्धि को डिस्टर्ब होने मत दो।

अनुभवी बनकर वातावरण को शक्ति दो...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

एक है सोचना, एक है अनुभव करना। तो यह अपने से पूछो मुझे आत्मा का अनुभव है? अभी इस बात के अनुभवी बनने का अभ्यासी बनो, बाबा भी कहते इसकी थोड़ी कमी है। अगर अनुभव हो जाये तो वो भूलता नहीं है। बाबा कहते नॉलेजफुल बहुत हैं लेकिन अनुभवीमूर्त नहीं। तो जो भी प्रॉब्लम्स हैं वो कर्म का ही सूक्ष्म रूप हैं, संस्कार का ही परिणाम सामने आता है। इसीलिए बाबा समय प्रति समय हमको आत्म-अभिमानि स्थिति का अनुभव करने के लिए कहता है। ट्रैफिक कंट्रोल करो, माना संकल्पों की ट्रैफिक बंद करके साइलेंस स्वरूप की स्मृति में रहो। साइलेंस स्वरूप तो आत्मा ही है। ऐसे समय व्यर्थ व साधारण संकल्प की तो बात ही नहीं है। अभी बाबा ने 8 बारी ड्रिल की बात कही, वो इसीलिए कहा कि बीच-बीच में बार-बार यह अभ्यास करते रहने से लिंक जुटा रहता है जिससे निरंतर साइलेंस स्वरूप आत्मा का नशा(स्थिति) रहे क्योंकि लिंक टूटा फिर जोड़ा तो इसमें मेहनत भी लगेगी, टाइम भी लगेगा। तो चेक करते रहो और चेंज करते रहो। योग किया या युद्ध किया, यह तो खुद को ही पता पड़ता है। मन के अंदर की गति(स्थिति) क्या है, वो हम ही जानते हैं क्योंकि आत्म-अभिमानि नहीं या मन के ऊपर कंट्रोल नहीं तो हमारा वायदा क्या है? मनजीते जगतजीत कैसे बनेंगे! मायाजीत कैसे बनेंगे! तो जितना समय चाहे मन कंट्रोल में रहे, यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। कर्म-कॉन्सेस की जगह सोल-कॉन्सेस की

स्थिति हो।

मन को विन करो तो वन नम्बर में आ जायेंगे। मन की मालिक आत्मा है, तो मन के मालिक बनो तब कर्मोन्ध्रियाँ ऑर्डर मानेंगी। तो मैं आत्मा मालिक हूँ, यह स्मृति पक्की हो जाये, नहीं तो वही पुराने संस्कार प्रकट होते रहेंगे, बार-बार धोखा खाते रहेंगे, परेशान होते रहेंगे। तो मतलब अमृतवेले योग का महत्त्व अनुभव में हो। अमृतवेले से लेकर बाबा मेरे लिए आता है, हमारा टीचर हमारे लिए आता है, बाबा वाणी सुनाने हमारे लिए आता है, खास हमारे को पढ़ा रहा है, ऐसे स्वयं को एक योग्य स्टूडेंट समझ करके बैठो। अभी एक सेकण्ड में मैं आत्मा हूँ, उस अनुभूति में रहो...और कुछ नहीं सोचना...

तो सभी ने अनुभव किया या युद्ध की? इसके लिए रोज कोई-न-कोई स्वमान स्मृति में रखो और उसको चेक करो तो अनुभवी मूर्त बनना है। जो हम कहते हैं, उसके अनुभव में रहें। परमात्मा ही हमारा सब कुछ है, यह अनुभव है? तो अनुभवी मूर्त बनेगी तो सब समस्यायें खत्म हो जायेंगी क्योंकि मालिक बन गये, करनकरावनहार बन गये, तो वो वायब्रेशन वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाता है। ऐसे शक्तिशाली वायुमण्डल में जो भी स्टूडेंट आयेंगे उन्हें भी मदद मिलेगी फिर आपका सेंटर देखो कितना उन्नति को पाता है। तो खुद अनुभवी बनके वातावरण को अनुभव की शक्ति दो, स्टूडेंट को हिम्मत दिलाओ अनुभव की।

नियम-मर्यादाओं के प्रतिकूल चलते तो खुशी नहीं होगी

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा हम बच्चों को शक्ति भी देता है, खुशी भी देता है। पहले खुश रहने की शक्ति देता है इसलिए सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश।

बाबा हम बच्चों को शक्ति भी देता है, खुशी भी देता है। पहले खुश रहने की शक्ति देता है इसलिए सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश।

बाबा हम बच्चों को शक्ति भी देता है, खुशी भी देता है। पहले खुश रहने की शक्ति देता है इसलिए सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो इसलिये सदा खुश।

ज्ञान क्या कहता है? योग अच्छा हो। ज्ञान है, हे आत्मा अपने को आत्मा समझ अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो, बस यह है योग। मैं रिअली आत्मा हूँ... देह के भान से परे। देह, रियलाइज न करूँ ना, तो बाबा दुनिया यहाँ है, जहाँ रावण का राज्य था अभी हम उस राज्य से निकल आये हैं। बाबा ने वहाँ

स्मृति से संसार का परिवर्तन

हमेशा ही मनुष्य को स्मृति रहती है। एक स्मृति है जो चेतना में रहती, दूसरी स्मृति है जो संस्कार के रूप में होती है, जो अर्धचेतन या अचेतन मन में होती है। इन स्मृतियों को काटने के लिए बाबा ने हमें नयी स्मृति दी, श्रेष्ठ स्मृति दी, पॉजिटिव स्मृति दी। स्मृति को काटने के लिए दूसरी स्मृति दी, उसी का नाम 'योग' है।

संस्कार मनुष्य को कैसे प्रभावित करता है? संस्कार प्रभावित करता है दृष्टि और वृत्ति के रूप में। संस्कार गुप्त चीज है, हमें पता ही नहीं पड़ता कि वह कैसे प्रभावित करता है। हम किसी व्यक्ति को वैसी दृष्टि से देखेंगे जैसा हमारा संस्कार होगा। किसी का काम वाला संस्कार होगा तो उसके नेत्रों को संस्कार कामाधीन कर देगा। वह देखेगा तो देह को देखेगा, देह की तरफ आकर्षित होगा। उसकी वृत्ति वासना वृत्ति हो जायेगी, काम वृत्ति हो जायेगी। क्रोधी की क्रोध वृत्ति हो जायेगी और लोभी की लोभ वृत्ति हो जायेगी। इस प्रकार संस्कार दो तरीके से प्रभावित करता है, एक दृष्टि और दूसरी वृत्ति। संस्कार है क्या चीज? संस्कार है एक गुप्त स्मृति। संस्कार वो स्मृति है जो पहले किये गये कर्मों से जुड़ी है। एक बार किया, दुबारा किया, तबारा किया और उसकी स्मृति को हम समानते गये। उसको रिफ्लेक्स एक्शन (प्रतिक्षेप क्रिया) कहते हैं। जैसे हम साइकिल चलाना सीखते हैं। उसका संतुलन रखने का ध्यान देते हैं। पहले एक बार चलाते हैं, फिर चलाते हैं, रोज चलाना शुरू करते हैं। आखिर वह हमारी स्मृति में बैठ जाता है कि साइकिल कैसे चलाना है। फिर उसको याद करने की हमें जरूरत नहीं पड़ती। साइकिल पर बैठने से ही, अपने आप पाँव चलाना शुरू कर देते हैं, हाथ हैंडल घुमाना शुरू करते हैं। संस्कार ऐसा बन गया कि जो काम हम बार-बार करते रहे, उसकी स्मृति हमारी चेतना या अर्ध चेतना में नहीं है, फिर भी वह स्मृति में है गुप्त रूप में। वह हमारे ध्यान से ओझल है, फिर भी है, हमारी दृष्टि और वृत्ति को प्रभावित करता है। जब तक उसको आप ठीक नहीं करेंगे तब तक आप ठीक नहीं होंगे। उसके लिए बाबा ने हमें क्या तरीका बताया? बाबा ने हमें विचार दिया

कि कौन-सा संकल्प-संस्कार अच्छा है, कौन-सा खराब है और संस्कारों को बदलना क्यों जरूरी है। इस चीज का हमें पता चल गया।

स्मृति में है बहुत बड़ी शक्ति

स्मृति के बगैर कोई भी काम संसार में नहीं हो सकता। कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसको कोई स्मृति नहीं है जब तक कि वह मर न जाये।



**राजयोगी ब.कु.
जगदीशचन्द्र हसीजा**

डॉक्टर कहते हैं कि यह मूर्छित है लेकिन फिर भी अन्दर कुछ न कुछ चलता रहा है। उस स्मृति की अभिव्यक्ति बाहर नहीं होती। नींद में भी मनुष्य को स्मृति होती है, यहाँ तक कि वह सपने देखता रहता है। स्वप्न में भी उसको अनेक प्रकार की स्मृतियाँ आती हैं इस जन्म की और पूर्व जन्म की। दोनों स्मृतियों के मिश्रण

से मदारी के खेल जैसा स्वप्न उसको आता रहता है। हमेशा ही मनुष्य को स्मृति रहती है। एक स्मृति है जो चेतना में रहती, दूसरी स्मृति है जो संस्कार के रूप में होती है, जो अर्धचेतन या अचेतन मन में होती है। इन स्मृतियों को काटने के लिए बाबा ने हमें नयी स्मृति दी, श्रेष्ठ स्मृति दी, पॉजिटिव स्मृति दी। स्मृति को काटने के लिए दूसरी स्मृति दी, उसी का नाम 'योग' है। लोग योग के नाम पर एकाग्रता करने लगे, प्राणायाम, हठयोग करने लगे। उससे कोई जीवन परिवर्तित नहीं हुआ। शरीर ठीक हुआ, चलो अच्छी बात है लेकिन विश्व परिवर्तन की जो बात है, वह हुई नहीं। उससे न अच्छे विचार मिले, न अच्छी स्मृति मिली। बाबा ने हमें यह चीज दी कि स्मृति में स्थित रहना ही 'योग' है। योग की कितनी ही किताबें उठाकर आप देख लीजिये। किसी ने भी नहीं कहा है कि 'स्मृति में स्थित रहना ही योग है'। बाबा ने योग की जो व्याख्या दी है, यह दुनिया में अनुपम है, बेमिसाल है।

स्मृति में इतनी बड़ी शक्ति है कि संस्कार में क्रान्ति ला सकते हैं। लोगों ने दुनिया में क्रान्ति लाने की कोशिश की। गोलडन रेवोल्यूशन, ग्रीन रेवोल्यूशन, व्हाइट रेवोल्यूशन इत्यादि। लेकिन उससे क्या हुआ? संसार में परिवर्तन आया? समाज में सुधार हुआ? क्रान्ति होनी चाहिए मनुष्य का व्यवहार बदलने की, मनुष्य के संस्कार बदलने की, मनुष्य की स्मृति बदलने की। तब जाकर संसार बदलेगा, विश्व में सुख और शांति आयेगी। स्मृति से विश्व में परिवर्तन आ सकता है। बिना स्मृति कोई कुछ कर ही नहीं सकता। बाबा की शिक्षा हमारे संग रहे इसका अर्थ क्या है? बाबा की शिक्षाओं की स्मृति हमें रहे। स्मृति हमारी कितनी बड़ी शक्ति है!



होशियारपुर-पंजाब। शिवरात्रि के पावन पर्व पर माननीय कैबिनेट मंत्री ब्रह्मशंकर जिप्पा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.उषा दीदी। साथ हैं डॉ.प्रो.जसवीरा, डॉ.मेहता, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा अन्य।



चित्तौड़गढ़-राज. 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर विधायक चंद्रभान सिंह आक्या को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिनीता बहन, मधुबन कॉलोनी सेवाकेन्द्र संचालिका।



फरीदाबाद-हरियाणा। 36वें इंटरनेशनल सूरजकुंड हैंडीक्राफ्ट मेले में ब्रह्माकुमारीज से.21डी द्वारा आयोजित ड्रग डी एंडिक्शन कैम्प एवं आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए पुलिस कमिश्नर विकास अरोरा। साथ हैं डीसीपी नितिन अग्रवाल तथा अन्य पुलिस कर्मियों सहित स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. रंजना बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



झोझूकलां-हरियाणा। महेश्वरात्रि महोत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए झोझू खंड पंचायत समिति चेयरमैन प्रतिनिधि वीरेंद्र यादव, जिला पार्षद प्रतिनिधि सुरेंद्र सिंह, अशोक थालौर, कविता बोडीसी, ब्र.कु. उर्मिला दीदी, संपादिका ज्ञानामृत पत्रिका, ब्र.कु.वसुधा बहन, ब्र.कु.ज्योति बहन, शमशेर पंच सहित ग्राम पंचायत के अन्य पंच।



मुरादाबाद-उ.प्र. नया मुरादाबाद से.1 स्थित ब्रह्माकुमारीज के शिवदर्शन भवन सेवाकेन्द्र में शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में नगर के मेयर विनोद अग्रवाल, जीएमएस इंग्र मक्स कंक्र्रीट के जेई योगेश शर्मा, स्मार्ट ट्रेवल बस सर्विस के मैनेजर दिगंबर जी, ब्रह्माकुमारीज मेरठ जोन की संचालिका ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. सुमित्रा दीदी सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



फतेहाबाद-हरियाणा। 'खुशनुमा जीवन जीने की कला' कार्यक्रम के शुभारंभ से पूर्व ईश्वरीय स्मृति में जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी बहन, राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी, क्षेत्रीय निदेशिका, पंजाब, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. मदन तथा अन्य।



मोतिहारी-बिहार। नगर के बेलबनवा में संचालित ब्रह्माकुमारीज उप सेवाकेन्द्र द्वारा 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. मीना बहन, डॉ. अतुल कुमार दलित साहित्य अकादमी के प्रदेश अध्यक्ष जागा राम शास्त्री, ब्र.कु. अशोक वर्मा, ब्र.कु. नीतू बहन, ब्र.कु. विभा बहन, उज्जवल भारत टीवी चैनल मुम्बई के संपादक बी रवि दूनना, आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के रीडर डॉ. आर.एन. सिंह, कामरु कामाख्या साधक अवधेश मिश्रा, अवकाश प्राप्त सेना के सूबेदार जे.पी. सिंह कुशवाहा, अधिवक्ता शिव पूजन राउत, भाजपा महिला सेल की जिला अध्यक्ष मीणा मिश्रा, योग प्रशिक्षक बहन पूजा, दैनिक भास्कर के वरिष्ठ पत्रकार गौरीशंकर तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

कोटा जंक्शन-एम.बी.एस. नगर(राज.)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर्व पर 'वर्तमान समय में शिव जयंती का अद्वितीय महत्त्व' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण करते हुए लव शर्मा, प्रतिपक्ष नेता नगर निगम कोटा उत्तर एवं पार्षद वार्ड 59, संजय शर्मा, डायरेक्टर, लॉर्ड कृष्ण स्कूल कोटा, कोटा संभाग प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी, कुन्हाड़ी, ब्र.कु. प्रीति बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

प्रधानमंत्री ने कहा... - पेज 1 का शेयर

विश्व में भविष्य के संकट के रूप में देखा जा रहा है। 21वीं सदी में दुनिया इस बात की गंभीरता को समझ रही है कि हमारी धरती के पास जल संसाधन कितने सीमित हैं। इतनी बड़ी आबादी के कारण जल सुरक्षा भारत के लिए भी एक महत्वपूर्ण दायित्व है। उन्होंने कहा कि हम जल को देव की संज्ञा देते हैं, नदियों को माँ मानते हैं। जब कोई समाज प्रकृति से भावनात्मक सम्बन्ध जोड़ लेता है, तो वह उसकी सहज जीवन शैली बन जाती है। हमारे देश में जल जैसे कार्य का नेतृत्व माताओं के हाथों में रहा है। इस दिशा में अब ब्रह्माकुमारी बहनें भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही हैं।

अभियान के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री मोदी सहित अन्य अतिथियों के सामने राजस्थान के प्रदेश भर से पहुंचे दस हजार से अधिक लोगों ने जल संरक्षण की शपथ ली। साथ ही अन्य लोगों को भी इसे लेकर जागरूक करने का संकल्प किया। कार्यक्रम में संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. चन्द्रकला दीदी समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने अतिथियों को सम्मानित किया।



जल-जन अभियान के उद्घाटन कार्यक्रम में...

प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, मेवाड़ के महाराज कुमार लक्ष्मराज सिंह मेवाड़, सुप्रसिद्ध अभिनेता नाना पाटेकर, प्रसिद्ध कवि एवं लेखक मनोज मुंतशिर सहित अनेक गणमान्य हस्तियां हुई शामिल

डायमण्ड सभागार में उपस्थित देश-विदेश से आये 15 हजार लोगों ने पानी बचाने एवं सभी को इसके प्रति जागरूक करने का लिया संकल्प



‘रोटी, कपड़ा और मकान’ में जोड़ लें ‘पानी’: मनोज मुंतशिर

मुम्बई से आये प्रसिद्ध कवि व लेखक मनोज मुंतशिर शुक्ला ने कहा कि हम बचपन से सुनते आये हैं कि जीवन के लिए कपड़ा, रोटी और मकान जरूरी है। लेकिन वर्तमान में इसमें एक शब्द और जोड़ने की जरूरत है, वह है पानी। पानी के बिना जीवन अधूरा है। यदि हम जरूरत से ज्यादा पानी का उपयोग कर रहे हैं तो यकीन मानिए हम किसी और

के हिस्से के पानी को बहा रहे हैं। पूरे संसार को पेयजल योग्य मात्र 0.5 फीसदी पानी ही उपलब्ध है। हमने आज इसकी कीमत नहीं समझी तो बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि हमें अब फौजी की तरह पानी बचाने के लिए लड़ना होगा। जब संसार में एक तरफ पानी खत्म होगा तो जिंदगी खत्म होना तय है।



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

देखा गया है कि व्यर्थ इसलिए चलता है क्योंकि हमारा पुण्य क्षीण हो गया है। इसलिए पुण्य करना जरूरी है। तो जितना कर्मणा सेवा हम करेंगे उतना कर्मणा सेवा करते-करते हमारा पुण्य अर्जित होना स्वाभाविक हो जाता है। जैसे-जैसे हम पुण्य अर्जित करेंगे हमारे खाते में जैसे-जैसे आता जायेगा, जमा होता जायेगा तो खुशी बढ़ने लगेगी। हर घड़ी उत्सव मनाओ। हर घड़ी उत्साह में रहो। उसमें कितनी अच्छी बात बाबा ने कही कि जब आप उत्साह में रहते हो तो परिस्थिति आपके ऊपर वार नहीं कर सकती। बहुत गहराई की बात है कि कैसे परिस्थिति वार नहीं करती है! जब हम उत्साह में होते हैं अर्थात् हमारी फुल स्पिरिट होती है। एक हाई एनर्जी अपने अंदर होती है। जब हाई एनर्जी अंदर में है तो परिस्थिति जब आती है तो वो लॉ एनर्जी, हाई एनर्जी को इफेक्ट नहीं करती, इसलिए कर्मणा सेवा करते हुए हम अपने जमा के खाते को बढ़ायें। बाबा ने तीनों के मार्क्स को एक समान रखा है, बराबर रखा है- मन्सा-वाचा-कर्मणा। ये नहीं कर्मणा का कम है या मन्सा का अधिक है या वाचा का अधिक है, नहीं। उस समय मन्सा सेवा तो संभव नहीं है। जब व्यर्थ इतना चल रहा

व्यर्थ विचारों के तूफान को कैसे लगायें फुलस्टॉप... !!!

ड्रामा में जितना निश्चय उतनी निश्चिंतता अर्थात् फुलस्टॉप

होता है तो तब हम कोई भी कर्मणा सेवा शुरू करते हैं और हमारा मन जब उसमें पिरोना शुरू होता है तो क्या होगा? अपने आप वो व्यर्थ समाप्त होगा। तो ये है फुलस्टॉप लगाने का पहला तरीका, मन को एक दिशा दो। अपने मन-वचन-कर्म को एक दिशा देना है।

जब हम उत्साह में होते हैं अर्थात् हमारी फुल स्पिरिट होती है। एक हाई एनर्जी अपने अंदर होती है। जब हाई एनर्जी अंदर में है तो परिस्थिति जब आती है तो वो लॉ एनर्जी, हाई एनर्जी को इफेक्ट नहीं करती, इसलिए कर्मणा सेवा करते हुए हम अपने जमा के खाते को बढ़ायें।

दूसरी बात, फुलस्टॉप लगाना माना निश्चयबुद्धि बनना। किसमें निश्चयबुद्धि बनना है? ड्रामा। ड्रामा में हमारा जितना निश्चय हो और वो भी निश्चय क्या होना चाहिए? जो हो रहा है वो भी अच्छा, जो हुआ वो भी बहुत अच्छा, जो होने वाला है वो तो सबसे अच्छा, तो निश्चिंत हो जाना। तो फुलस्टॉप लगाना माना निश्चिंतता का अनुभव करना। जब समय

कल्याणकारी है, बाप कल्याणकारी है, ड्रामा कल्याणकारी है तो हमारा अकल्याण करने की ताकत किसमें है? है किसमें? जब ये निश्चय हो जाता है तो भी एक सेकण्ड के अंदर फुलस्टॉप लग जाता है। तो मुख्य बात यही है कि या तो परिवर्तन करने की शक्ति हमारे अंदर आ जाये या दूसरी निश्चयबुद्धि बनकर निश्चिंत हो जाना कि कल्याण हुआ ही पड़ा है। “वाह-वाह” के गीत गाना शुरू करें। “वाह बाबा, वाह ड्रामा वाह, वाह रे मेरा भाग्य वाह!” तो जितना “वाह-वाह” के गीत गाते हैं उतना माना अपनी स्पिरिट को हाई करते हैं।

बाबा कहते हैं कि अगर “वाह-वाह” नहीं भी होगा तो परिवर्तन होकर “वाह-वाह” हो जायेगा। ये भगवान का वरदान है इसलिए “वाह-वाह” के गीत जरूर गाना चाहिए। इसको कहते हैं फुलस्टॉप। कोई गाना गाता है तो अपने आप सारी दुनिया भुला हुआ है, है कि नहीं! उस गाने में वो कितना मग्न हो जाता है। जो सारी दुनिया भूल जाती है। ठीक इसी तरह जब हम भी “वाह-वाह” के गीत गायेंगे तो दूसरा सब भूल जायेंगे। तो व्यर्थ समाप्त हो जायेगा और “वाह-वाह” से हर चीज “वाह-वाह” होने लगेंगी। तो निगेटिव को कमप्लीट हम पॉजिटिव में चेंज कर दें। तो ये दूसरा तरीका है फुलस्टॉप लगाने का। फिर देखो कैसे परिवर्तन होता है!

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

OR

Whatsapp, Telegram No:- 9414172087



SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



Merchant Name: REEF On Shanti Media

UPI ID: 900000007041@bkivv





वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

जरा सोचें...

अपनी महानता से व्यवहार करें, दूसरों को देखकर नहीं

हमारी पढ़ाई का पहला पाठ - स्व का दर्शन

मेरा अपना और आप सबका भी ये अनुभव तो होगा कि ज्ञान में आते ही बाबा के ज्ञान से 50 प्रतिशत बातें तो खत्म हो गईं। है ना सबका अनुभव! अब पहले जैसी अवस्था तो नहीं बिगड़ती है ना! पहले अवस्था बिगड़ती थी तो रजाई ओढ़कर सो जाते थे। मूड ऑफ हो गया। अब तो शक्तिशाली बनते जा रहे हैं ना! अब स्थिति नहीं बिगाड़नी है। हम ज्ञान का स्वरूप बनें। बाबा की याद से हमें इतना सुख मिलता है, आनंद मिलता है कि फिर हमें और छोटी-मोटी, तेरी-मेरी, मैं-

तो जितने हम योगी बनेंगे, हमारा संगठन कितना भी बड़ा बन जाये, बड़ा संगठन है तो बड़ी बातें हैं। घर में चार रहेंगे तो कम बातें आयेंगी, अब इतना बड़ा परिवार है तो सोचो दादियों के सामने कितनी बातें आती होंगी! पर जब एक बार स्वीकार कर लिया कि बाबा के बच्चे हैं, हमें मिलकर सेवा करनी है, हमें मिलकर पुरुषार्थ करना है, तो ये छोटी-मोटी संस्कार-स्वभाव की बातें असर नहीं करती हैं। मुझे हलचल का कारण नहीं बनना है, ये पक्का कर लो। मेरे कारण यज्ञ में कोई विघ्न

संगठन हो, कितने भी वैरायटी, नंबरवार भाई-बहनें हैं, लेकिन एक अटेंशन अगर आपको अपनी स्थिति पर है तो दूसरों के लिए चिंतन नहीं चलेगा। ये ऐसा है, वैसा है, कैसा है, टेढ़ा है, बांका है, जो भी है, जब हम ये सोचते हैं, उस समय हम भूल जाते हैं कि मैं भी कैसी हूँ या कैसा हूँ! मैं भी तो परफेक्ट नहीं हूँ। मेरे में भी तो कमियां हैं। तो जब दूसरों के लिए ऐसा सोचते हैं, मतलब खुद पर अटेंशन नहीं है।

हमारी पढ़ाई का पहला पाठ कौन-सा है? खुद पर ध्यान दो, 'स्व' दर्शन करो। पहला पाठ ही बाबा ने ये सिखाया। इसलिए रोज अच्छी तरह मुरली की स्टडी करो। बहुत अच्छी तरह बाबा की याद में बैठो। योग में बैठना माना चारों ओर से बुद्धि सिमट जाये। बाबा ने कहा ना, एकरस। कई कहते हैं ना, योग में दो मिनट ऊपर जाते हैं, फिर हम नीचे आ जाते हैं। घड़ी-घड़ी बुद्धि इधर-उधर जाती है। क्योंकि हम डिटैच नहीं हुए, न्यारे नहीं हुए। जब बाबा की याद में बैठो तो चारों ओर से न्यारे हो जाओ। बुद्धि से ऊपर उठ जाओ। बाबा के सामने शांति से बैठ जाओ। तो आप आनंद स्वरूप होकर वापस आयेंगे। आत्मा फ्रेश हो जाती है। पर बाबा के सामने भी शांति से नहीं बैठ पाते हैं क्योंकि दुनिया भर की पंचायत बुद्धि में भरी हुई है। इसलिए अपने को डिटैच नहीं कर पाते। ऊपर गये ही नहीं बाबा के पास, बुद्धि के विमान से यहाँ ही घूमते रहते हैं। इसलिए लाल लाइट से सफेद लाइट होते ही हिलने लगते हैं इधर-उधर। क्योंकि बाबा के सामने प्यार से बैठे ही नहीं। तो जितना ज्ञान-योग क्वालिटी करेंगे, कोई हलचल नहीं आयेगी। फिर वो लौकिक वाले हों, अलौकिक वाले हों, नौकरी धंधे की बातें हों या शरीर की बातें हों, कोई नहीं हिलायेगा।

जब बाबा की याद में बैठो तो चारों ओर से न्यारे हो जाओ। बुद्धि से ऊपर उठ जाओ। बाबा के सामने शांति से बैठ जाओ। तो आप आनंद स्वरूप होकर वापस आयेंगे। आत्मा फ्रेश हो जाती है।

तू, मान-शान की कोई इच्छा ही नहीं रहती। क्योंकि बाबा की याद से ही कितना सुख मिलता है। लेकिन ब्राह्मण बनने के बाद भी तो कितनी बातें आती हैं! अगर हम सावधान न रहें तो हमारे में भी तो कितनी बातें आ जाती हैं। पहले दुनियावी पोस्ट, पोजीशन, धन, रूप, बुद्धि का अभिमान होता था। अब वो नहीं है। पर अब किसी को ज्ञान का अभिमान है, मैं ही अच्छी तरह समझाता हूँ, किसी को योग का अभिमान होता है, किसी को सेवा का अभिमान होता है, सहयोग का अभिमान होता है। पर योगी बनना माना इस दुनिया से न्यारा और बाबा का प्यारा। तो हमें फीलिंग नहीं आयेगी। चलो किसी ने मान नहीं दिया, सेवा का चांस नहीं दिया, फीलिंग नहीं आयेगी। क्योंकि हम अपने स्वमान में हैं, ऊँचे हैं, खुद भगवान हमें इतना प्यार कर रहा है।

नहीं आना चाहिए। हमें यज्ञ का रक्षक बनना है। यज्ञ को विभाजित नहीं करना है। भगवान ने परिवार बनाया है, हमें तोड़ने के लिए निमित्त नहीं बनना है। यज्ञ शांति के लिए है, यज्ञ पवित्रता के लिए है, यज्ञ विश्व कल्याण के लिए है। यज्ञ माना क्या, ये मकान थोड़े ही, यज्ञ माना हम सभी। हम जीवंत यज्ञ हैं। हमें बाबा के यज्ञ को अखंड, अमर रखना है। जो हम सहयोग कर सकते हैं, हम करें। खुशी से करें, निरसकल्प होकर करें। बाबा ने कहा है, जो बच्चे समय पर... कौन-सा समय? जब भगवान को हमारे साथ की आवश्यकता है, संगम का समय। इस समय पर भगवान को एक धक से, निरसकल्प होकर, जो बाबा के मददगार बनते हैं, उनको बाबा अंत तक मदद देने के लिए बंधा हुआ है, और ये सत्य है। इसलिए कितना भी बड़ा



लखनऊ-उ.प्र.। ग्लोबल इन्वेस्टर्स सम्मिट-2023 में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'स्वर्णिम भारत का आधार शाश्वत योगिक खेती' स्टॉल का राज्य के कैबिनेट मंत्री राकेश सचान, संजय निषाद, अनिल राजभर, राज्य मंत्री डॉ. अरुण कुमार, जसवंत सिंह सेनी, केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर, आईएसएस संजय भुसरेड्वी, मुकेश मेथ्राम, नीति आयोग के कई अधिकारी तथा अनेक कम्पनियों के निदेशकों सहित बड़ी संख्या में प्रतिष्ठित लोगों ने अवलोकन किया। इस अद्वितीय स्टॉल की स्थापना में राज्य के अपर मुख्य सचिव कृषि डॉ. देवेश चतुर्वेदी, लखनऊ त्रिपाठी नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. इंद्रा दीदी, गोमती नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. राधा दीदी तथा वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. बन्नी विशाल भाई का विशेष योगदान रहा।



मंडी-हि.प्र.। द्रंग विधानसभा क्षेत्र के विधायक पूर्ण चंद को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. दीपा बहन व ब्र.कु. रुमा बहन।



फ्लोरिडा-यू.एस.ए.। कोरोना महामारी के कारण तीन वर्षों के लम्बे अंतराल के पश्चात् हॉलीवुड लाइब्रेरी में ब्रह्माकुमारीज द्वारा मेडिटेशन सेशन रखा गया जिसमें ब्र.कु. गंगा, ब्र.कु. मेरिडिथ, ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. कैथरीन एवं ब्र.कु. एड्वा समेत 20 भाई-बहनें शामिल रहे।



फिरोज़पुर कैंट-पंजाब। 'शिव जयंती सो गीता जयंती' के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए एडवोकेट योगेश गुप्ता, सदस्य छावनी बोर्ड, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. शक्ति तथा अन्य भाई-बहनें।



सोनीपत-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा शिव शक्ति स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में पुलवामा में शहीद हुए 44 जवानों को श्रद्धांजलि दी गई एवं उनकी याद में 44 पौधे लगाए गए। इस मौके पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रमोद बहन, स्कूल के शिक्षक व विद्यार्थी मौजूद रहे।



नूरपुर बेदी-फ्रेड्स कॉलोनी(पंजाब)। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति भवन में आयोजित कार्यक्रम में शहर के प्रसिद्ध कथावाचक स्वामी अमोलका नंद जी महाराज, शाम बाबा आश्रम जज्ञ गरीबदास सम्प्रदाय, स्वामी श्री अजरानंद, प्रसिद्ध समाज सेवी व प्रचारक कानपुर खुई, आचार्य श्री विपिन अत्री, कथावाचक, राम सहारा आश्रम नंगल ढक्का बंधेरी, राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. अदिति बहन, मोहाली, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. वीना बहन व अन्य गणमान्य लोगों सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



राजगीर-नालंदा(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' में जैन, क्रिश्चन, हिंदू, इस्लाम आदि सभी धर्म एवं पंथ के प्रतिनिधियों सहित ब्र.कु. अनुपमा बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



हसनपुर-हरियाणा। महाशिवरात्रि के अवसर पर जगदीश नायर, विधायक एवं भूमि सुधार व विकास निगम के चेयरमैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ईंदिरा बहन। साथ हैं शीतल चौधरी, डिप्टी कमांडेंट बीएसएफ तथा ब्र.कु. राज दीदी।



ठेसपीढ़-झारखंड। चक्रधरपुर के सूर्या नर्सिंग होम की संचालिका रंजिता महतो को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सुशीला बहन।

भारत में चाय एक पॉपुलर ड्रिंक है और बहुत से लोगों का दिन तो चाय के बिना शुरू ही नहीं होता। हर शाम गार्डन में बैठकर चाय की चुस्कियां लेना या फिर किताब पढ़ते हुए चाय पीने का भी अलग ही मजा है। आप अपनी इस आदत से ठेकरों फायदे भी पा सकते हैं और इसके लिए आपको ज़्यादा मेहनत नहीं करनी है। बस अपनी रेगुलर चाय को हर्बल टी से रिप्लेस कर दें।

हर्बल टी को आजकल बहुत कवरेज मिल रही है और इसके पीछे बहुत से कारण भी हैं। हर्बल टी आपके स्वास्थ्य के लिए कई मायनों में फायदेमंद है फिर चाहे बात कैमोमाइल टी की हो, टर्मेरिक टी की हो या फिर पिपरमेंट टी की। हर्बल टी में एंटी-ऑक्सीडेंट्स होते हैं, साथ ही इनमें एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटी वायरल गुण भी होते हैं। अगर आप हर्बल टी को अपनी डाइट में नियमित रूप से शामिल करती हैं तो आपको क्या-क्या फायदे मिलते हैं, आइए जानते हैं...



हर्बल टी के फायदे

एंजायटी होती कम

सामान्य चाय में कैफीन होती है, जिसका अधिक सेवन आपके स्वास्थ्य को हानि पहुंचा सकता है। कैफीन शरीर को डिहाइड्रेट कर देती है। इसलिए आपको सामान्य चाय की जगह हर्बल टी का सेवन करना चाहिए। हर्बल टी में कैफीन नहीं होती है। कैफीन का सेवन कम करने से स्ट्रेस और एंजाइटी कम करने में मदद मिलती है। रिसर्च बताती है कि रोज़ टी का सेवन करने और रोज़ वॉटर इन्हेल करने से एंजाइटी के मरीजों को आराम मिलता है।

डाइजेशन होता अच्छा

डाइजैस्टिव और गैस्ट्रोइंटेस्टिनल प्रॉब्लम के लिए भी हर्बल टी बहुत लाभकारी हैं। आप इनका सेवन दिन में दो बार करेंगे तो आपका पाचन दुरुस्त होगा। विशेष तौर पर कैमोमाइल टी डाइजैस्टिव सिस्टम के फंक्शन में सुधार करती है। इसमें फ्लैवोनोइड्स और टरपेनोइड्स होते हैं। यह बुखार, इन्फ्लेमेशन, मसल्स क्रेप और इंसोमनिया जैसी समस्याओं को ठीक करने में मदद करती है।

हर्बल टी को भी करें अपनी डाइट में शामिल



स्वास्थ्य

एंटी-एजिंग गुण

हर्बल टी हर्ब्स से बनती हैं और हर्ब्स में एंटी ऑक्सीडेंट्स जैसे पॉलीफेनल, फ्लैवोनोइड और कैटेचिन आदि मौजूद होते हैं। एंटी ऑक्सीडेंट्स त्वचा को यूवी किरणों से प्रोटेक्ट करते हैं, साथ ही एंटी ऑक्सीडेंट्स ऑक्सीडेशन प्रोसेस को कम करते हैं जिससे शरीर में फ्री रेडिकल्स का प्रभाव कम होता है। फ्री रेडिकल्स एजिंग साइन्स के लिए जिम्मेदार होते हैं। इसलिए हर्बल टी का सेवन करने से एंटी-एजिंग

इफेक्ट मिलते हैं और झुर्रियां/फाइन लाइन्स कम होती हैं।

बोन हेल्थ होती बेहतर

महिलाओं को अक्सर उम्र बढ़ने के साथ-साथ हड्डियों के जोड़ों में दर्द की शिकायत होने लगती है। घुटनों में दर्द बहुत ही आम समस्या हो गई है। ऐसे में हर्बल टी का सेवन आपके लिए लाभकारी होगा। हर्बल टी जैसे रूइबोस टी में आयरन,

खिलाफ लड़ सकता है साथ ही कई बीमारियों से खुद को बचा सकता है।

शरीर के दर्द में आराम

टर्मेरिक टी या हल्दी की चाय उन लोगों के लिए लाभकारी है जो अर्थराइटिस या गाउट जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। हल्दी में एंटी-इन्फ्लेमेटरी प्रॉपर्टीज होती हैं जो जोड़ों से सूजन को कम करती है और अर्थराइटिस के लक्षणों को कम करती है।



रक्सौल-बिहार (भारत नेपाल सीमा)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 87वें त्रिमूर्ति शिवजयंती समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्रह्माकुमारीज नेपाल की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, नेपाल की उप निदेशिका ब्र.कु. किरण दीदी, ब्र.कु. राम सिंह भाई, बीरगंज सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रवीना बहन, नगर परिषद के उपसभापति राकेश कुशवाहा, समाजसेवी शिवपूजन सिंह तथा अन्य।



काकटपूर-पंजाब। महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित रैली के माध्यम से जन-जन को परमात्म संदेश दिया गया। इस रैली में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुप्रिया बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल हुए।



समस्तीपुर-बिहार। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए वकाऊ फूड्स प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर डी.के.श्रीवास्तव, माधुरी श्रीवास्तव, आईएमए के अध्यक्ष डॉ.डी.एस.सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका रानी दीदी, मुजफ्फरपुर, ब्र.कु.कृष्ण तथा ब्र.कु.सविता बहन।



बिजनौर-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के बैराज रोड अनुपम विहार स्थित सेवाकेन्द्र द्वारा शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता एवं सदर विधायक के पति मौसम चौधरी, जिला कारागार के जेलर शैलेंद्र प्रताप, मा.आबू से ब्र.कु. दिनेश भाई, बाली राज.से ब्र.कु.मधु बहन, ब्र.कु.माधुरी बहन, ब्र.कु.सुरेश बहन, ब्र.कु. जगपाल भाई, ब्र.कु.सुधा बहन, ब्र.कु.प्रवेश बहन, मुंबई से ब्र.कु.विकास भाई सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनें शामिल रहे।



रामगढ़ कैंट-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज द्वारा शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए चंद्रप्रकाश चौधरी, सांसद एवं पूर्व जल संसाधन, पेयजल एवं स्वच्छता राज्यमंत्री, ब्र.कु. निर्मला दीदी, वर्षा श्रीवास्तव, अधिवक्ता तथा ब्रह्माकुमार भाई।



आस्का-ओडिशा। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित शिव दर्शन झाँकी में उपस्थित हैं ब्र.कु. प्रवती बहन, कविसूर्यनगर की विधायक लतिका प्रधान, वाइस चेयरमैन विक्रान्त साहू, भगवान स्वेन तथा अन्य।



भोरे-गोपालगंज (बिहार)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् एस.आई. अनिल कुमार पासवान एवं मुखिया मोहन सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंगूर बहन, ब्र.कु. रूबी बहन, ब्र.कु. कान्ति बहन तथा अन्य।

समय की मांग... निर्भरता को कम करते चलें

हमें क्या लगता है, हम किन-किन चीजों के गुलाम हैं? कभी-कभी हम अपने आप को सिचुएशन पर डिपेंड पाते हैं, कभी लोगों के बिहेवियर पर, कभी-कभी तो टेक्नोलॉजी

छोटी-छोटी बातों पर हम रिएक्ट कर देते हैं, कोई हमारी तरफ एक नज़र ठीक से ना देखे तो हम रूठ जाते हैं अर्थात् डिपेंडेंसी और बढ़ती जा रही है। आज हमें इन डिपेंडेंसीज़ को खत्म करना है।

हम सबको फ्रीडम अच्छी लगती है ना! लोगों को तो हम कह देते हैं मुझे फ्रीडम चाहिए, आप मुझे मत बोलो क्या करना है क्या नहीं करना है। आज हमें

करना है। तो तीन एनर्जी है थॉट्स, वर्ड्स एंड बिहेवियर। ये हमारा रिसॉन्स है जो एवरी सिचुएशन है। लेकिन यह रिसॉन्स क्या हम चूज़ कर रहे हैं! क्या हम डिसाइड कर रहे हैं या हम सिर्फ जैसी सिचुएशन जैसा व्यक्ति वैसा हम रिएक्ट कर देते हैं और फिर कहते भी हैं कि मेरी गलती नहीं थी, बात ही ऐसी थी, उन्होंने बात ही ऐसी की। इसका मतलब हम अपने निर्णय की जिम्मेदारी भी नहीं लेते हैं,

लोगों को तो हम कह देते हैं मुझे फ्रीडम चाहिए, आप मुझे मत बोलो क्या करना है क्या नहीं करना है। आज हमें अपने मन को कहना है कि मुझे फ्रीडम चाहिए कि यह मेरा निजी संस्कार है, यह मेरा स्वभाव है, आई विल चूज़, आई विल चूज़।

अपने मन को कहना है कि मुझे फ्रीडम चाहिए कि यह मेरा निजी संस्कार है, यह मेरा स्वभाव है, आई विल चूज़, आई विल चूज़। आज दिन तक हम चूज़ तो करते हैं जीवन के बड़े-बड़े डिसिज़न्स, कौन से कॉलेज में जाना है, कौन-सा कोर्स करना है, कौन हमारे फ्रेंड्स हैं, कहाँ काम करना है। यह हमारे जीवन के बड़े-बड़े डिसिज़न्स होते हैं और यह हमें चूज़ करने अच्छे लगते हैं। लेकिन कुछ डिसिज़न होते हैं जो सारा दिन हो रहे हैं। छोटे-छोटे डिसिज़न। कौन से डिसिज़न? कोई बात आई, सामने से कोई सिचुएशन आई, किसी व्यक्ति ने कुछ कहा, किसी तरह काम किया, ये सामने से आती हुई सारे दिन के अंदर छोटी-छोटी सिचुएशन्स हैं। लेकिन हर सिचुएशन में हम रिसॉन्ड करते हैं।

कोई भी बात आती है, हमारी एक थॉट चलती है। फिर कई सिचुएशन में हमारे बोल निकलते हैं, कुछ सिचुएशन्स में हमें बिहेव भी

क्योंकि हमें लगता ही नहीं कि यह मैंने डिसाइड किया था, हमें लगता ही नहीं कि यह मैंने चूज़ किया था। हमें लगता है कि यह अपने आप हो जाता है। इसका मतलब हम कौन-सी स्टेज पर आकर पहुंचे कि हमें यह अवेयरनेस ही नहीं है कि यह एक डिपेंडेंसी है, हमें अवेयरनेस ही नहीं है कि हम किसी के बिहेवियर, किसी के एक शब्द के गुलाम बन चुके हैं। हमारा मन स्वतंत्र नहीं है कि इसको क्या सोचना है, मुझे क्या बोलना है। इतनी डिपेंडेंसी आ गई कि हमें अवेयरनेस ही नहीं है कि हम डिपेंडेंट हैं।

तो इस डिपेंडेंसी को, इस गुलामी को आज खत्म करना है ताकि सारे दिन के छोटे-डिसिज़न कि हर सीन में कैसे रिसपॉन्ड करना है, हरेक के व्यवहार के सामने कैसे रिसपॉन्ड करना है, कोई काम ठीक करे ना करे, मुझे कैसे रिसपॉन्ड करना है। मेरा रिसॉन्स, मेरी थॉट, मेरा वर्ड, मेरा बिहेवियर मेरे अनुसार होना चाहिए, सही होना चाहिए, एक्ज्यूट होना चाहिए।



ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

गैजेट, जो चीजें हम सारा दिन यूज़ करते हैं, उनके लिए भी हम कहते हैं कि इसके बिना मेरा नहीं चलता, इसके बिना तो मेरा काम ही नहीं हो सकता। कभी-कभी जब वह चीज़ ठीक नहीं चलती, एक चीज़ नहीं मिलती तो हम परेशान, हताश हो जाते हैं, तो उन साधनों के भी हम गुलाम बन जाते हैं। कभी-कभी हम खाने-पीने की चीजों के गुलाम बन जाते हैं। पता है कि ये नहीं खाना चाहिए, फिर भी कहते हैं क्या करें, इसके बिना मेरा नहीं चलता। यह ना हो तो मन परेशान हो जाता है, इनके बिना मेरा नहीं चलता, यह शब्द, यह बिलीफ सिस्टम हमारी इस गुलामी को, इस इमोशनल डिपेंडेंसी को, इस इमोशनल बॉन्डेज को बार-बार और पक्का करता जाता है, पक्का करता जाता है और जितना हम इसको पक्का करते जाते हैं हमारी गुलामी और बढ़ती जाती है।



माउण्ट आबू-पांडव भवन। 87वीं शिवजयंती पर शिव ध्वजारोहण करते हुए संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. शशिप्रभा दीदी, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, राजयोगी ब्र.कु. डॉ. प्रताप मिश्रा, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंगल, ब्र.कु. नीलू दीदी तथा देश-विदेश से आये अन्य वरिष्ठ भाई-बहनें।



धुरी-पंजाब। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बरनाला सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बृज दीदी, ब्र.कु. सुदर्शन दीदी, ब्र.कु. पुष्प दीदी, ब्र.कु. सोमा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मूर्ति दीदी, ब्र.कु. सुनीता दीदी, ब्र.कु. शीला बहन, डॉ. ए.आर. शर्मा, एम.डी., ए.पी. राईसीला मिल, अशोक शास्त्री, रिंकू चौधरी, एम.सी., विकास शर्मा, ए.डी.ए., रामपाल आर्य, महामंत्री आर्य समाज, हरदीप सिंह, प्रधान गुरुद्वारा रामगढ़िया साहिब, मनजीत सिंह बख्शी, रिटा. डीपीआरओ, मलकीत सिंह चांगली, चैयरमैन तरण संगम, विजय कुमार गुप्ता, सावका प्रधान व्यापार मंडल धुरी तथा अन्य अनेक गणमान्य लोग शामिल रहे।



वाराणसी-सीतापुर(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित आठ दिवसीय कार्यक्रम के दौरान शोभायात्रा को शिव ध्वजा दिखाकर खाना करते हुए मा.आबू से वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रामनाथ, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. योगेश्वरी बहन, प्रबंधक ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु.रामेश्वर तिवारी, ब्र.कु.गंगाधर तथा अन्य।



कादमा-हरियाणा। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला परिषद चैयरमैन मनदीप डालावास, जिला पार्षद नीलम रानी, सरपंच चांदपति, जिला पार्षद सुनील इंजीनियर, सुधीर चांदवास चैयरमैन सहकारिता बैंक, बीडीसी, अशोक थालौर, महेश फौजी, सुबे स्वामी पंच, कमल सिंह सचिव गौशाला, सतबीर शर्मा, सुरेश पूर्व सरपंच, बीडीसी प्रतिनिधि नाथूराम, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।



भीनमाल-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग, स्थानीय सेवाकेन्द्र, रेडियो मधुबन तथा खेतावत फाइनैशियल रिसोर्सेस प्रा.लि. के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'वॉइस ऑफ भीनमाल' कॉन्टेस्ट के फिनाले में कृष्णा हॉस्पिटल के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. प्रेमराज बोहरा, सामाजिक कार्यकर्ता श्रवण सिंह राठौड़ दासपा, मुम्बई से प्रसिद्ध सिंगर कविता प्रसाद, सिंगर कुसुम, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन, रेडियो मधुबन से आर.जे. रमेश भाई, सौजन्यकर्ता ओमप्रकाश खेतावत, अशोक खेतावत, एडवोकेट सुरेश बोहरा, प्रतिभागी सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण करने के पश्चात् शोभायात्रा का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए अंचल पदाधिकारी बिपिन कुमार सिंह, नगर परिषद कार्यपालक पदाधिकारी डॉ.अजीत कुमार शर्मा, नगर परिषद अध्यक्ष अरूण केसरी, ब्र.कु.अंगूर बहन, ब्र.कु.सुनीता बहन, ब्र.कु.अनिता बहन तथा अन्य।



दिल्ली-वसंत विहार। गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान एम्बेसडर ऑफ फिजी इन इंडिया कमलेश एस.प्रकाश के साथ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शीरा बहन, ब्र.कु. लीना बहन, मा.आबू तथा ब्र.कु. नथमल भाई, कटक ओडिशा।



हाथरस-आनन्दपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर आयोजित विशाल शोभायात्रा में जज योगी शिवा, नगरपालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा, अधिवक्ता बीना गुप्ता, अधिवक्ता प्रेम सिंह, कवि राकेश राजस्थानी, प्रेमरघु पैरामेडिकल के निदेशक डॉ. पी.पी. सिंह, भ्रष्टाचार उन्मूलन संघ के अध्यक्ष रामगोपाल दीक्षित सहित अन्य भाई-बहनें शामिल हुए।

परमात्म ऊर्जा



बातें सभी स्पष्ट देनी हैं लेकिन स्नेह के साथ। स्नेहमूर्त होने से उन्होंने को जगत् माता के रूप का अनुभव होगा। जैसे माँ बच्चे को भले कैसे भी शब्दों में शिक्षा देती है, तो माँ के स्नेह कारण वह शब्द तेज व कड़वे महसूस नहीं होते। समझते हैं- माँ हमारी स्नेही है, कल्याणकारी है। वैसे ही आप भले कितना भी स्पष्ट शब्दों में बोलेंगे लेकिन वह महसूस नहीं करेंगे। तो ऐसे दोनों स्वरूप की समानता की सर्विस करनी है, तब ही सर्विस की सफलता समीप देखेंगे। कहाँ भी जाओ तो निर्भय होकर, सत्यता की शक्ति स्वरूप होकर, ऑलमाइटी गर्वनमेंट के सी.आई.डी ऑफिसर होकर उसी नशे से जाओ। इस नशे से बोलो, नशे से देखो। हम अनुचर हैं- इसी स्मृति से अयथार्थ को यथार्थ में लाना है। सत्य को प्रसिद्ध करना है, न कि छिपाना है। लेकिन दोनों रूपों की समानता चाहिए। किसको देखते हो वा कुछ सुनते हो तो तरस की भावना से देखते-सुनते हो या सीखने और कॉपी करने के लक्ष्य से सुनते-देखते हो? आजकल की जो भी अल्प सुख भोगने वाली आत्मायें प्रकृति दासी के शो में दिखाई देती हैं, उन्होंने के शो

को देखकर स्थिति क्या रहती है? यह आत्मायें इस तरीके व इस रीति-रस्म में, प्रकृति की दासी के रूप में स्टेज पर प्रख्यात हुई हैं, इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए व हमें भी इन्हों के प्रमाण अपने में परिवर्तन करना चाहिए। यह संकल्प भी अगर आया तो उनको क्या कहेंगे? क्या दाता के बच्चे भिखारियों की कॉपी करते हैं? आपके आगे कितने भी पाम्प शो में आने वाली आत्माएं हों लेकिन होवनाहार प्रत्यक्ष रूप के भिखारी हैं। इन सभी आत्माओं ने बापदादा के बच्चों से थोड़ी बहुत शक्ति की बूंदों को धारण किया है। आप लोगों के शक्ति की अंचली लेने से, आजकल इस अंचली के फल, प्रकृति दासी के फल रूप में देख रहे हैं। लेकिन अंचली लेने वाले को देख सागर के बच्चे क्या हो जाते हैं? प्रभावित। यह सभी थोड़े समय में ही आप लोगों के चरणों में झुकने के लिए तड़पेंगे। इसलिए स्नेह के साथ सर्विस का जोश भी होना चाहिए। जैसे शुरू में स्नेह भी था और जोश भी था। निर्भय थे, वातावरण व वायुमण्डल के आधार से परे। इसलिए एकरस सर्विस का उमंग और जोश था।



गया-टिकरी(बिहार)। महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर शोभायात्रा रथ को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए महापौर अजहर इमाम, रेड क्रॉस सचिव जितेंद्र मोहन चन्द्रवंशी, राजयोगिनी ब्र.कु.शीला दीदी तथा अन्य।

कथा सरिता

एक महिला हर रोज पूजा करने के लिए मंदिर में जाती थी। लेकिन वो अपनी पूजा सही से नहीं कर पाती थी। वो महिला एक दिन परेशान होकर मंदिर के पुजारी के पास जाती है और उनसे कहती है कि कल से मैं पूजा करने के लिए मंदिर में नहीं आऊंगी।

पुजारी ने उस महिला से पूछा कि क्यों? महिला ने उस पुजारी को कहा कि मैं हर रोज मंदिर में आती हूँ और देखती हूँ कि यहाँ लोग आते हैं और फोन से अपने व्यापार की बात करते हैं। कुछ लोग ने तो मंदिर को ही गपशप करने का स्थान बना दिया है और कुछ लोग तो भगवान की पूजा कम और पाखंड ज्यादा करते हैं।

इन सब लोगों से डिस्ट्रेक्ट होकर मैं अपना मन पूजा में नहीं लगा सकती हूँ और इसलिए मैंने ये तय किया है कि मैं कल से मंदिर में नहीं आऊंगी। पुजारी ने उस महिला से पूछा कि आप अपना अंतिम निर्णय लेने से पहले क्या मेरे कहने पर एक काम कर सकती हो? महिला ने कहा कि जी जरूर आप बताइये मुझे क्या करना है।

पुजारी ने महिला से कहा कि आप एक गिलास में पानी भर लीजिए और 2 बार मंदिर परिसर के अंदर परिक्रमा लगाइये लेकिन शर्त यह है कि गिलास का पानी गिरना नहीं चाहिए। महिला ने कहा अच्छा



ठीक है मैं वैसा करती हूँ। थोड़ी ही देर में महिला ने एक गिलास में पानी लेकर वैसा ही कर दिखाया। उसके बाद पुजारी ने महिला से पूछा कि क्या आपने मंदिर में किसी को फोन पर बात करते हुए देखा, किसी

आपका पूरा ध्यान गिलास पर ही था कि इसमें से पानी ना गिर जाये। इसलिए आपको कुछ भी नहीं दिखाई दिया। इस गिलास की तरह ही आप अब से जब भी मंदिर में आयें तो अपना ध्यान



को पाखंड करते हुए देखा या फिर किसी को मंदिर में गपशप करते हुए देखा?

महिला ने पुजारी से कहा कि जी नहीं मैंने कुछ भी नहीं देखा। फिर पुजारी ने कहा कि जब आप परिक्रमा लगा रही थी तब

सिर्फ भगवान में ही लगाना फिर आपको कुछ नहीं दिखाई देगा। आपको दूसरी चीजें तभी दिखाई देती हैं जब आप उन पर ध्यान देते हैं और अपने काम में एकाग्रता नहीं रखते हैं।

एक बार चार दोस्त अपने कॉलेज के प्रोफेसर से मिलने के लिए उनके घर पर जाते हैं। वो प्रोफेसर अब बूढ़े हो चुके थे। वो इन चारों दोस्त को एक साथ देखकर बहुत खुश हो जाते हैं। वो लोग कुछ देर बातें करते हैं। बातें करने के बाद प्रोफेसर उनके लिए चाय बनाने के लिए अंदर जाते हैं।

ये चारों दोस्त अपनी-अपनी परेशानियां एक-दूसरे को बताने लगते

के सामने रखे।

उस चार कप में से एक कप सोने का था, दूसरा कप चांदी का था, तीसरा कप कांच का था और चौथा कप साधारण था। प्रोफेसर ने उन चारों दोस्तों को चाय लेने को कहा। तभी प्रोफेसर ने देखा कि सबसे पहले सोने का कप था वो एक दोस्त ने उठा लिया, उसके बाद दूसरे ने चांदी का कप लिया और तीसरे ने कांच का कप उठाया। जब

चाय देने के लिए चार अलग-अलग कप रखे थे।

प्रोफेसर ने उनको समझाते हुए कहा कि ये चाय हमारे जीवन की तरह है और ये जो चाय के अलग-अलग कप हैं वो हमारे जीवन का केवल नज़रिया ही है। सबको पीना तो चाय ही है लेकिन किसी ने सोने का कप लिया तो किसी ने चांदी का।

हम ये चाय मिट्टी के कप में भी पी सकते हैं और यही चाय सोने के कप में भी पी सकते हैं। इस तरह जीवन भी एक चाय ही है जोकि सबका समान है। लोग सांसारिक चीजें जैसे कि अच्छी जाँब, अच्छी कार, बड़ा बंगला और आदि के पीछे भागते रहते हैं और अपना सारा जीवन दुःख में ही निकाल देते हैं। इन सबकी वजह से वो लोग अपनी जीवनरूपी चाय का आनंद ही नहीं उठा पाते हैं। क्या फर्क पड़ता है कि हम चाय मिट्टी के कप में पिएं या फिर सोने के कप में? आखिर हमें पीनी तो चाय ही है ना।

हमें अपना जीवन सांसारिक चीजों के मोह में बर्बाद नहीं करना चाहिए। ये बात सच है कि हमें अपना लक्ष्य पूरा करना चाहिए और उसमें अपना बेस्ट एफफर्ट देना चाहिए, पर ये बात भी सच है कि हमें अपने लक्ष्य को खुश रहकर ही पूरा करना चाहिए।

हमारी ज़िंदगी तभी अच्छी बन सकती है जब हम ज़िंदगी का नज़रिया अच्छा बना दें।



ज़िंदगी का नज़रिया

हैं। कोई बोल रहा है कि मेरी सेलरी बहुत कम है, तो फिर कोई ये बता रहा था कि मेरे पास कार नहीं है और एक दोस्त बता रहा था कि मुझ पर अब कर्जा बहुत बढ़ गया है।

वे सब अपनी लाइफ से खुश नहीं थे। प्रोफेसर अंदर से इन सबकी बातें बहुत ही ध्यान से सुन रहे थे। प्रोफेसर ने बाहर आकर 4 कप उन चार दोस्तों

आखिर में कोई च्वाइस ही नहीं बची थी तो वो चौथे दोस्त ने आखिरी कप ले लिया।

ये देखते हुए प्रोफेसर बहुत मुस्कुराने लगे तभी उन चारों ने प्रोफेसर से पूछा कि आप क्यों मुस्कुरा रहे हो? तभी प्रोफेसर ने बताया कि मैं जब चाय बना रहा था तभी आप लोगों की बातें सुन रहा था और मैंने इसलिए ही आपको

भारत में परंपरागत तरीके से नवरात्रि मनायी जाती है। नवरात्रि का भावनात्मक अर्थ है दुर्गा के नौ रूपों की नौ दिनों तक पूजा-अर्चना और नवरात्रि का आध्यात्मिक अर्थ है नव या नए युग में प्रवेश करने से ठीक पहले की ऐसी घोर अंधियारी रात्रि, जिसमें 'शिव' अवतरित होकर मनुष्यात्माओं के पतित अवचेतन मन (कुसंस्कार) का ज्ञान अमृत द्वारा तरण (उद्धार) कर देते हैं। अवतरण अर्थात् अवचेतन मन का तरण। ऐसी तरित-आत्माएं फिर चैतन्य देवियों के रूप में प्रत्यक्ष होकर कलियुगी मनुष्यों का

से शंकर की पत्नी बनीं। दुर्गा को शिव-शक्ति कहा जाता है। हाथ में माला भी दिखाते हैं। माला परमात्मा के याद का प्रतीक है। जब परमात्मा को याद करेंगे तो जीवन में सामना करने की शक्ति, निर्णय करने, सहन करने, सहयोग करने इत्यादि अष्ट शक्तियां प्राप्त होती हैं। इसलिए दुर्गा को अष्ट भुजा दिखाते हैं।

2. नवरात्रि का दूसरा दिन देवी 'ब्रह्मचारिणी' का है, जिसका अर्थ है- तप का आचरण करने वाली। तप का आधार पवित्रता होता है, जिसके लिए जीवन

नवरात्रि में नया बनकर नये युग में प्रवेश करें...

नवरात्रि

का आध्यात्मिक अर्थ

है नव या नए युग में प्रवेश करने से ठीक पहले

की ऐसी घोर अंधियारी रात्रि, जिसमें 'शिव' अवतरित होकर मनुष्यात्माओं के पतित अवचेतन मन में कुसंस्कार को बदल ज्ञान अमृत द्वारा उद्धार करना। परमात्मा हमारी पुरानी स्मृतियों को परवर्तित कर नये युग की तैयारी करने के समय के रूप में मनायें।

इस देवी के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्द्धचंद्र, 10 हाथों में खड्ग, शस्त्र, बाण इत्यादि धारण किये दिखाये जाते हैं। चंद्रघण्टा देवी की सवारी शक्ति का प्रतीक सिंह है जिसका अर्थ है कि शक्तियां (देवियां) अष्ट शक्तियों के आधार से शासन करती हैं।

4. नवरात्रि के चौथे दिन देवी 'कुष्माण्डा' के रूप में पूजा की जाती है। बताया जाता है कि यह खून पीने वाली देवी है। कालिका पुराण में देवी की पूजा में पशु बलि का विधान है। इसी मान्यता के आधार पर देवियों के स्थान पर बलि-प्रथा आज भी प्रचलित है। वास्तव में, हमारे अंदर जो भी विकारी स्वभाव और संस्कार हैं उस

पर विकराल रूप धारण करके अर्थात् दृढ़ प्रतिज्ञा करके मुक्ति पाना है।

5. नवरात्रि के पाँचवें दिन देवी 'स्कन्द माता' के रूप में पूजा की जाती है। कहते हैं कि यह ज्ञान देने वाली देवी है। इनकी पूजा करने से ही मनुष्य ज्ञानी बनता है। यह भी बताया गया है कि स्कन्द माता की पूजा ब्रह्मा, विष्णु, शंकर समेत यक्ष, किन्नरों और दैत्यों ने भी की है।

6. नवरात्रि के छठवें दिन देवी

ने प्रसन्न होकर उसे काली से गोरी बना दिया।

इसका आध्यात्मिक रहस्य यही है कि एक आत्मा को परमात्मा से सम्बंध जोड़ने के लिए खुद के सभी कालेपन अर्थात् विकार और बुराइयों को समाप्त करना ही होता है। एक सच्चे और साफ मन को ही परमात्मा स्वीकार करते हैं अर्थात् उसे अपना बना लेते हैं। इस देवी का वाहन वृषभ बैल दिखाया जाता है जो कि धर्म का प्रतीक है।

9. नवरात्रि के नौवें दिन देवी 'सिद्धिदात्री' के रूप में पूजा की जाती है। कहा गया है कि यह सिद्धिदात्री वह शक्ति है जो विश्व का कल्याण करती है। जगत का कष्ट दूर कर अपने भक्तजनों को मोक्ष प्रदान करती है।

इस तरह नौ देवियों के आध्यात्मिक रहस्यों को धारण करना ही नवरात्रि पर्व मनाना है। वर्तमान समय स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा इस कलियुग के घोर अंधकार में माताओं-कन्याओं द्वारा सभी को ज्ञान देकर फिर से स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। परमात्मा द्वारा दिए गए इस ज्ञान को धारण कर अब हम ऐसी नवरात्रि मनायें कि जो अपने अंदर महिषासुर, शंभु-निशुभ और मधु-कैटभ जैसे विकार हैं, वह खत्म हो जायें, मर जायें। तो हे आत्माओं! अब जागो, केवल नवरात्रि का जागरण ही नहीं करो बल्कि इस अज्ञान नींद से भी जागो। यही सच्ची-सच्ची नवरात्रि मनाना और जागरण करना है। ऐसी नवरात्रि की आप सभी को बहुत-बहुत बधाई।



उद्धार करती हैं। इस प्रकार पहले शिवरात्रि होती है, फिर नवरात्रि और फिर नवयुग आता है। महाविनाश से यह वसुन्धरा जलमन होकर कल्पांत में अद्भुत स्नान करती है, फिर स्वच्छ होकर नौ लाख देवी-देवताओं के रूप में नौलखा हार धारण करती है।

1. नवरात्रि का पहला दिन दुर्गा देवी के रूप में मनाया जाता है। वह 'शैलपुत्री' के नाम से पूजा जाती है। बताया जाता है कि वह पर्वतराज हिमालय की पुत्री थी। इसलिए पर्वत की पुत्री 'पार्वती या शैलपुत्री' के नाम

में ब्रह्मचर्य की धारणा करना आवश्यक है। इस देवी के दाहिने हाथ में जप करने की माला और बाएं हाथ में कमण्डलु दिखाया जाता है।

3. नवरात्रि के तीसरे दिन देवी 'चंद्रघण्टा' की पूजा की जाती है। पुराणों की मान्यता है कि असुरों के प्रभाव से देवता काफी दीन-हीन तथा दुःखी हो गए, तब देवी की आराधना करने लगे। फलस्वरूप देवी 'चंद्रघण्टा' ने प्रकट होकर असुरों का संहार करके देवताओं को संकट से मुक्त किया।



जयपुर-श्रीनिवास नगर (राज.)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सीताराम अग्रवाल, कोषाध्यक्ष, कांग्रेस कमेटी राज. एवं रीको निदेशक जयपुर, ब्रह्माकुमारीज अजमेर उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शांता दीदी, पूर्व डीन एन.एल. मीणा, जौबनेर एपीकल्चर यूनिवर्सिटी, उद्योगपति बी.डी. खंडेलवाल, उद्योगपति ब्र.कु. मदनलाल शर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हेमा बहन, ब्र.कु. कविता बहन, ब्र.कु. मीना बहन तथा अन्य।



भद्रक-ओड़िशा। सत्यम् शिवम् सुंदरम् दिव्य परिचय अभिजन रथ का उद्घाटन कर रैली निकालते हुए डॉ. अनिल कुमार दास, ब्र.कु. मंजू बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

आज मानव मन की दशा किसी से छुपी हुई नहीं है। हर कोई आज पूरी तरह से त्रस्त (भयभीत) है, तनाव ग्रस्त है। अगर कोई कर्म कर रहा है तो उसमें कोई न कोई लोभ है, इच्छाएँ हैं, लालसा है, विलासा है जो हमारे पाप कर्मों के खाते को और बढ़ाता जा रहा है। पुण्य तो सोच ही नहीं सकता कि आज मानव पुण्य का काम कर रहे हैं। सो पुण्य क्या है? पुण्य सिर्फ ये है कि जितना ज्यादा से ज्यादा हम इन तत्वों के साथ रहते हुए, इन तत्वों के बीच में

खराब करके दे तो एक समय ऐसा आयेगा कि आप चीज तो देंगे लेकिन वो देंगे जो पहले से खराब हुई पड़ी है, या दिखा देंगे। अच्छी चीज अपने लिए रखेंगे।

ऐसे ही प्रकृति है। पूरे दिन, पूरी रात जो हमारी सोच और संकल्प चलते हैं उसमें हमारी सोच और संकल्पों में सिर्फ और सिर्फ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की बातें ही हैं, और कुछ भी नहीं हैं। यही पूरे विश्व में वायब्रेट हो रहा है। पूरे विश्व की आत्माओं को यही बातें जा रही हैं। और

हो। प्रकृति का हर तत्व हमको कितना सुख देता है बिना टैक्स लिए सुख देता है। हवा, पानी, अग्नि, धरती और आकाश। बिना शर्त, बिना कंडीशन हमको सुख देते हैं। इस दुनिया में बिना कंडीशन जो हमको सुख देता है, सेल्फलेस सर्विस करता है उसकी रक्षा हम करते हैं। ये सबसे अच्छा उदाहरण है हमारे जीवन के लिए कि देखो हम आपके बारे में कितना सोचते हैं। पानी के बारे में कितना सोचते हैं। जल को संरक्षण देने के बारे में सोचते हैं, हवा को

यही है कि जब हम अच्छे सोच और संकल्प में जीवन जीना शुरू करते हैं तो ऑटोमेटिकली हमारे अन्दर से जो थॉट हमारे ब्रेन को जाते हैं, हमारे स्पाइन कॉर्ड को जाते हैं, हमारे पूरे बॉडी पार्ट्स को जो भी चीजें जाती हैं उससे वायब्रेट होकर चारों तरफ वही तरंग वायब्रेट होकर फैल जाती हैं। और उससे सिर्फ वही चीजें चारों तरफ जाती हैं, जो लोग उससे मिलते हैं वो सारी चीजें उनको मिल भी जाती हैं। तो आप सोचो प्रकृति को हम नैचुरल बिना

लौटाया है। अब समय आ गया है कि प्रकृति को सही चीज दें ताकि जब जरूरत पड़े या हमारा जीवन नया

मिले तो हमको प्रकृति की तरफ से तोहफे के रूप में अच्छा शरीर मिले। वो शरीर जिस शरीर के अन्दर कोई रोग न हो, निरोगी काया हो।

तन इतना सुन्दर हो कि उसमें कोई रोग नहीं है तभी तो तन को आपको चलाने में आसानी होगी। इसका एक मात्र तरीका है प्रकृति को अच्छी बातें देना, अच्छे संकल्प देना, अपने शरीर की प्रकृति को बैलेन्स देना, इसको वो खिलाना जो सात्विकता हो, जो प्रकृति को पसंद है, जो मांसाहार, ऐसी चीजें जो शरीर को नुकसान पहुंचाती हैं। वो अगर हम देंगे तो त्रासदी हम देख रहे हैं। इसलिए इसका उदाहरण जो सामने दिख रहा है उससे अच्छा कुछ नहीं हो सकता। चलो हम जाग जाते हैं और अपने आपको ऐसे समय में, तत्वों से पार जाने के लिए परमात्मा के साथ जुड़कर इन तत्वों को सतोप्रधान बनाने की सेवा करते हैं और अच्छे शरीरों का निर्माण करते हैं।



डॉ. अनुज भाई, दिल्ली

त्रासदी में तत्वों से पार ले जाता है योग

रहकर पूरे विश्व की आत्माओं को वो दें जो उनको इस समय जरूरत है, तो तत्व भी सतोप्रधान होंगे। तत्वों में बल आयेगा और हम इन तत्वों से कभी आहत नहीं होंगे। उदाहरण के लिए मैं आपको एक बात कहना चाहूंगा कि जैसे कहा जाता है कि अगर कोई भी बहुत करीबी आपका हो और कोई भी चीज आपको उसे देनी हो तो आप ज्यादातर उसको वो चीजें देते हैं जो चीजें उसके लायक हैं, लेकिन वो व्यक्ति बार-बार आपको उस चीज को

वही हमको रिवर्ट (लौटना) होकर मिल भी रही हैं। प्रकृति ने हमको ये एक बहुत सुन्दर शरीर दिया जब हमने बहुत अच्छा कर्म किया था। अब धीरे-धीरे हम प्रकृति के तत्वों को डैमेज कर-कर के वो शरीर लौटाते चले गये, तो आज हमको वैसा ही शरीर प्राप्त हो रहा है जो हमने प्रकृति को लौटाया है। इसलिए अगर प्रकृति को मुझे सच में अच्छा देना है तो सबसे पहले उन तत्वों को उन सभी को वो चीजें हमको प्रदान करनी पड़ेंगी जो उनके लिए सुखदाई

शुद्ध करने के बारे में सोचते हैं। सोचते हैं ना! क्यों सोचते हैं, क्योंकि ये निःस्वार्थ भाव से हमारी सेवा करते हैं। लेकिन जैसे ही हम सभी स्वार्थी हुए तो और-और चीजों पर हमारा ध्यान चला गया प्रकृति को छोड़कर, लेकिन आपको पता हो कि बिना प्रकृति के तो हमारा शरीर नहीं रहेगा ना! इसलिए प्रकृति की तरफ से प्राकृतिक आपदाएँ हमको डिस्टर्ब कर रही हैं।

इसलिए जो योग ब्रह्माकुमारीज में सिखाया जाता है उसका सबसे बड़ा रोल

किसी एफर्ट (प्रयत्न) के एक छोटा-सा अभ्यास करके उसको बहुत कुछ प्रदान कर सकते हैं। तो क्यों न हम प्रकृति को इस तरह से सतोप्रधान बनायें। अच्छी सोच और अच्छे संकल्पों के लिए एक बार परमात्मा से शक्ति लेकर जिस प्रकृति ने आपको इतना सुख दिया है, इतना अच्छा जीवन दिया है, इतने समय तक इतना सुन्दर वस्त्र दिया है वो आप कैसा लौटा रहे हैं। इसलिए आज शरीर अपंग पैदा हो रहे हैं क्योंकि हमने शरीर उसको ऐसा

निकलकर उनकी आत्मा को जा रहे हैं, और फिर एक मिनट के लिए उन्हें संकल्प देंगे- तुम पीसफुल सोल हो। पापा तुम तो ग्रेट सोल हो, तुम बहुत बुद्धिमान हो, अभी तुम्हें अपनी शक्तियों को, मन की शक्तियों को क्रोध में नष्ट नहीं करना है। बी पीसफुल, बी पीसफुल। तो शांति के वायब्रेशन उनको जायेंगे और उनके विवेक की जागृति होगी। जब वो उठेंगे, दो-चार दिन लगेगे इसमें, उन्हें ये फील होने लगेगा कि क्रोध तो बहुत बुरा है। दो दिन होंगे, चार दिन होंगे, फिर सात दिन में बहुत अच्छा रिजल्ट दिखाई देगा। और जब आप अपनी जाँब के लिए भी यूएई चले जायें तब भी आपको ये काम करते ही रहना चाहिए। तो 21 दिन में बहुत अच्छा हो जायेगा।

इसमें सबको यही सिद्धांत याद रखना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति सोया है तो उसका सबकॉन्शियस माइंड जगा है। जो कुछ विचार हम इधर से देते हैं तो सबकॉन्शियस माइंड उसे आसानी से रिसीव कर लेता है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपको अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

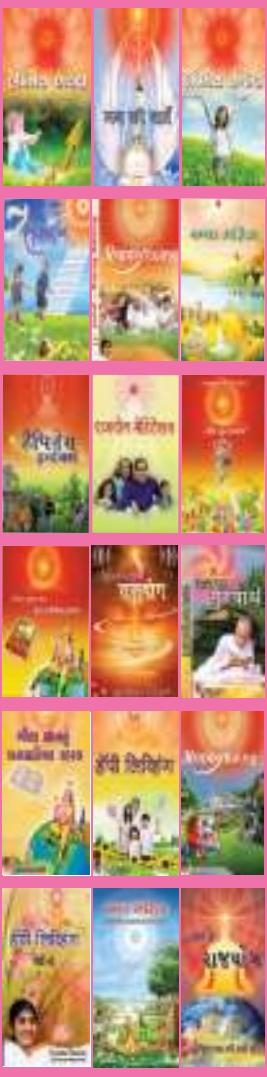
Peace of Mind CABLE Network

hathway, SUN DEN, DigiCable, GTPL, 1065, 678, 1221, 1087, 1084, 1060, 578

AWAKENING The Brother's Kumbha TV channel is available on



जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न- मेरा नाम लक्ष्मण चौहान है। कार्य करते हुए मेरा चित्त एकाग्र नहीं होता, एक कार्य हाथ में होता है, चिंतन दूसरे की लगी रहती है। सफलता तो जीवन से जैसे गायब-सी ही हो गई है, ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर- एकाग्रता मनुष्य की दिनोंदिन नष्ट होती जा रही है और नष्ट होने के कारण उसकी मानसिक शक्तियों में ह्रास हो रहा है इसलिए सफलता उससे दूर चली जा रही है। यही कारण है कि मनुष्य को खुशी नहीं होती। अब जब सफलता ही नहीं होगी, जो कार्य करने मनुष्य गया वो निराश होकर लौटा है तो नींद पर भी उसका असर आयेगा, पारिवारिक जीवन पर उसका असर आयेगा। उसकी छाया उसके मानस पटल पर प्रैक्टिकल में दिखाई देती रहेगी। तो हमें इस चीज पर बहुत ध्यान देना है कि हमारी एकाग्रता भंग न हो, हालाँकि ये एक बहुत बड़ा सबजेक्ट है और हम इस पर बार-बार चर्चा करते ही आते हैं लेकिन आज मैं इस पर इतना कहूँगा कि हर मनुष्य को सवेरे से ही यह चेक कर लेना चाहिए कि मेरा मन किस दिशा में ज्यादा भटकता है और इस मन को भटकने से रोकने के लिए एक मोस्ट इम्पोर्टेंट जो चीज है कि हम सवेरे अपने मन में सुंदर थॉट क्रियेट करें। ये बात सभी बहुत अच्छी तरह जान लें कि हमारे मन में बहुत बड़ी क्रिएटिव एनर्जी है। हम उसको यूज नहीं करते तो क्रिएटिव एनर्जी निगेटिव क्रियेट करने में यूज होने लगती है। हम अपनी क्रिएटिव एनर्जी को पहचानें और सुंदर संकल्प सवेरे से ही क्रियेट करना शुरू करें।

सुबह उठते ही बहुत अच्छे, वाह! मेरा जीवन कितना सुन्दर है, प्रकृति कितनी सुंदर है। हे प्रभु, तुमने कितना सुंदर संसार बनाया है वाह! हम तो धन्य हो गये, हमारा जीवन तो बहुत सुंदर हो गया। तुम हमें मिल गये हो वाह! मेरा भाग्य, मैं तो बहुत भाग्यवान आत्मा हूँ। आपने मुझे ब्लैसिंग दे दी। वरदान दे दिया है सफलता

का, निर्विघ्न जीवन का, आज तो मैं सारा दिन निर्विघ्न रहूँगा। सफलता तो मेरे आगे-पीछे चलेगी। ऐसे संकल्प उठते ही कर देने चाहिए। इसलिए हमारे यहाँ रोज सवेरे ईश्वरीय महावाक्य सुनने का नियम है और जो लोग ईश्वरीय महावाक्य सुनते हैं उन्हें रोज अनुभव होता है कि उन्हें अच्छे थॉट मिल जाते हैं। तो इसमें ये जो थॉट हमें परेशान कर रहे थे उसने हमारे मन पर अपना अधिकार कर लिया था। अब हम इन नये थॉट्स के द्वारा अपने मन पर पूर्ण अपना अधिकार करें तो इससे सारा



राजयोगी ब्र.कु. सूर्य भाई

दिन बहुत मदद मिलेगी और अगर कोई बहुत अच्छा पुरुषार्थ करना चाहता है तो सारे दिन में जो ईश्वरीय महावाक्य सुने हैं उनमें से कोई दो महावाक्य, दो-तीन बार अवश्य याद कर लेना चाहिए।

तो ये चेक करें कि मन किस दिशा में भटकता है और दूसरा सवेरे बहुत अच्छे थॉट्स क्रियेट करें और तीसरी चीज जो आपको करनी होगी कि बीच-बीच में हर घंटे में एक बार कम से कम दस सेकण्ड ये अभ्यास जरूर करें कि मैं एक आत्मा हूँ, इस देह से अलग हूँ। मैं भगवान का बच्चा हूँ, महान आत्मा हूँ ऐसी फीलिंग देंगे तो संकल्प का प्रवाह ठीक होगा। मन एकाग्र होगा तो आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

प्रश्न- मेरा नाम प्रशांत है। मैं अभी यूएई में जॉब करता हूँ। मैं अहमदाबाद सिटी से बिलौंग करता हूँ। मेरी प्रॉब्लम ये है कि मेरे फादर हमेशा ही छोटी-छोटी बातों में गुस्सा

करते हैं, बात-बात में मम्मी से लड़ते रहते हैं और हम दोनों को ही रिस्पेक्ट नहीं देते हैं। मैं चाहता हूँ कि मम्मी-पापा दोनों बहुत प्यार से रहें और रिस्पेक्ट भी दें, क्या इसके लिए कोई योग का अभ्यास हो सकता है?

उत्तर- हाँ, ये समस्या बहुतों की है। कई घरों में ऐसा है कि कहीं मम्मी में, कहीं पापा में क्रोध रहता है। बच्चे कहीं-न-कहीं सोचते तो हैं ना कि उनके घर में सम्पूर्ण सुख-शांति हो। तो मैं दोनों को कहूँगा कि जो समझदार हो उसे चुप रहना चाहिए, पहली चुप्पी करनी चाहिए मातृशक्ति को, क्योंकि मातायें अधिक सहनशील होती हैं। पुरुष में कहीं-न-कहीं ज्यादा 'ईगो' रहता ही है, मेल 'ईगो' भी रहता है इसलिए आपकी माता जी के लिए कहूँगा कि मेरी ये रिक्वेस्ट है कि वो अपने घर में शांति स्थापित करने के लिए अपने पति को सम्मान दे और उनकी बात सुन लिया करें। ठीक है वो गलत बोलते होंगे, गलत

शब्दों का भी प्रयोग करते होंगे जो मनुष्य की रिस्पेक्ट को ज़रा नीचा कर दे। और आपके पापा को भी मैं कहूँगा कि क्रोध अशांति पैदा करता है, क्रोध एक अग्नि है जिसमें मनुष्य की सुख-शांति, सम्पत्ति, उसका श्रेष्ठ भाग्य सब कुछ नष्ट हो जाता है। मनुष्य निगेटिव हो जाता है, क्रोध अनेक बीमारियों को भी जन्म देता है।

तो आपका कर्तव्य है कि जब तक आप अपने घर अहमदाबाद में हैं तब तक रोज आधा घंटा सवेरे, आधा घंटा शाम को अपने घर में शांति के वायब्रेशन फैलायें। मैं आत्मा पीसफुल हूँ, मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ, केवल इतना ही और मुझ से शांति की किरणें फैल रही हैं। एक ये अभ्यास करेंगे और थोड़ा-सा सवेरे पाँच बजे जब आपके पाप सोये हों तो उन्हें आत्मिक दृष्टि से देखते हुए चार-पाँच मिनट अच्छे वायब्रेशन देंगे और उसका तरीका ये होगा कि शिवबाबा के वायब्रेशन मुझे आ रहे हैं और मुझ आत्मा से

लोभवश भटकते मन को रोके...

वरिष्ठ

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

संतुष्टता हमारे अनेक व्यर्थ संकल्पों को शांत कर देती है। एक योगयुक्त आत्मा का प्रमुख गुण है जो उसके जीवन से, व्यवहार से, चेहरे से, बोल-चाल से दिखायी देगा, संतुष्टता। योगी अगर संतुष्ट नहीं है तो उसका मन अवश्य भटकेगा। कई सन्यासियों की बातें भी हम सुना करते थे। बहुत पैसा भी लोग उन पर चढ़ाते थे, लेकिन वो झोपड़ी में ही रहे। पैसा जो भी आता था, भंडारा करा देते थे। उनको कुछ नहीं चाहिए। वही प्रसिद्ध हुए, वो ही दूसरों का कल्याण कर सके। जिसके मन में इच्छाओं का उबाल आता रहा है ये चाहिए, ये चाहिए...। जिसकी इच्छायें कभी शांत ही नहीं होती। कभी खान-पान की इच्छा, कभी पहनने की इच्छा, कभी इलेक्ट्रॉनिक साधनों की इच्छा, सुंदर घर में रहने की इच्छा, प्लेन से यात्रा करने की इच्छा। इच्छाओं के तो सौ प्रकार हैं। इच्छाओं का फैलाव मन को कमजोर कर देता है। जो मनुष्य संतुष्ट नहीं है वो लोभी हो जाता है। कहावत आप ने सुनी होगी। "लोभी नर कंगाल है, दुःख पावत दुःख लेत"। दुःख देता भी है, दुःख लेता भी है और वो कंगाल ही है सचमुच। कईयों के पास बहुत पैसे हैं लेकिन रहते ऐसे जैसे कंगाल, पेंट भी फटी हुई पहनेंगे। वैसे आजकल तो फटी हुई पेंट पहनना फैशन हो गया है, लेकिन कई बड़े लोग भी जो समझदार हैं वो आधुनिकता के चक्रव्यूह में नहीं उलझते। कपड़े पुराने-सुराने पहने रहेंगे। घर में भी साफ-सफाई नहीं करने देंगे, नौकरानी नहीं रखने देंगे। लोभी रहते हैं, पैसा बचाओ, पैसा बचाओ। इससे कोई फायदा नहीं होता।

मनुष्य क्यों कमाता है? परिवार को, स्वयं को

सुखी रखने के लिए, तो हमें लोभ के वश नहीं होना है। देखिये, एक है इच्छायें, दूसरी होती हैं आवश्यकतायें। आवश्यकतायें तो जो हैं वो हैं। अभी आपको कोई बीमारी हो गई तो आपको दवाई की आवश्यकता है। ठंडी बढ़ गई आपको गर्म कपड़ों की आवश्यकता है। बहुत गर्मी हो गई आपको पंखे की, ए.सी. की आवश्यकता है। वो तो आवश्यकतायें हैं, उनको तो पूर्ण करना ही होगा लेकिन कुछ मनुष्य कहीं भी तृप्त नहीं होते हैं। ये चीज मिल गई, दूसरे के पास देख लिया, उसके पास अच्छी है उससे अच्छी लूंगा, कपड़े अच्छे पहनने हैं, ज्वेलरी बहुत अच्छी है। दूसरों को वैसी पहने देख लिया तो सोचेंगे कि ये तो मजा नहीं आया, इससे अच्छी होनी चाहिए मेरे

मुझे तो भगवान से ही सब कुछ लेना है। मुझे तो स्वर्ग की राजाई चाहिए, इससे कम कुछ नहीं चाहिए। मैं तो नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी ही बनूँगी। चाहे मुझे कितनी भी तपस्या करनी पड़े। इस तरह के सुंदर विचार मन को नयी दिशा देंगे।

पास, मन भटकेगा। ऐसा न भी हो तो इवड़ा करने का प्लान बनायेंगे। ऐसे लोग दूसरों को धोखा भी बहुत देते हैं। गलत तरीकों से धन कमाते रहते हैं, वो भी एक चोरी है। व्यर्थ संकल्पों का तृप्तान मन में रहता है। वो अपने मन को एकाग्र करना चाहें तो नहीं कर सकते हैं, अनेक विद्यार्थी हमने देखे हैं। भिन्न-भिन्न कारणों से उनके मन की गति बहुत तेज हो जाती है तो चित्त शांत नहीं होता। एकाग्रता नहीं होती है। पढ़ाई-लिखाई भारी लगती है। टेंशन पैदा करती है।

इसलिए आज सभी अपने मन में संकल्प करें कि जब हम भगवान के बच्चे बन गये, उससे हमें सब कुछ मिल रहा है तो क्यों न हम उससे सब कुछ लें? सांसारिक इच्छायें, ये संसार की छोटी-मोटी प्राप्ति, ये कई युगों से हमारे साथ

रही हैं। सतयुग में तो क्या-क्या होगा हमारे पास, इतना ज्यादा होगा जो कोई इच्छायें ही नहीं होंगी। हम इतने सम्पन्न और भरपूर होंगे। तो क्यों न हम उस स्थिति की ओर चलें, लोभ पर ध्यान दें। ऐसा तो नहीं बहुत कुछ होते भी हमारा लोभ समाप्त नहीं होता है! आत्मा संतुष्ट हो ही नहीं रही है! संतुष्टता तो बहुत सुंदर चीज है भगवान के शब्दों में, संतुष्टता बहुत बड़ी प्रोपर्टी है और प्रसन्नता तुम्हारी परसनेली है। जो व्यक्ति लोभी है वो तो चक्रव्यूह में घूमता ही रहता है।

केवल जो भगवान के बच्चे बन गये, जिन्होंने ईश्वरीय प्राप्ति के बाद अपने चित्त को शांत और संतुष्ट कर लिया वे इस लोभ से मुक्त होकर अपने को शांत कर सकते हैं। तो चेक करेंगे भगवान को पाने के बाद भी हम इस संसार से और क्या पाना चाहते हैं। जबकि वो स्वर्ग की राजाई हमारे लिये लेकर आया है। जबकि वो हाईएस्ट स्टेटस देने आ गया है तो हम उसे छोड़कर किसके पीछे भाग रहे हैं? जो तृष्णायें हैं, जहाँ से

आत्मा तृप्त होगी ही नहीं, जो व्यर्थ संकल्पों को जन्म दे रही हैं। अपने स्वमान को बढ़ायें- भैरव आत्मा हूँ, सम्पन्न हूँ। मैं तो दाता हूँ, देने वाली हूँ, इष्ट देव-देवी हूँ, मेरा दर्शन करके ही अनेकों की मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। मुझे माँगने का हाथ तो फैलाना ही नहीं है। मुझे अपने मन से इच्छाओं को कम करना है। एक लक्ष्य बना लें।

मुझे तो भगवान से ही सब कुछ लेना है। मुझे तो स्वर्ग की राजाई चाहिए, इससे कम कुछ नहीं चाहिए। मैं तो नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी ही बनूँगी। चाहे मुझे कितनी भी तपस्या करनी पड़े। इस तरह के सुंदर विचार मन को नयी दिशा देंगे। उमंग-उत्साह देंगे, व्यर्थ से मुक्त रखेंगे। फिर धीरे-धीरे आप छह मास में अनेक इच्छाओं की गुलामी से मुक्त हो जायेंगे।



फतेहाबाद-हरियाणा। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए विधायक चौधरी दूड़ा राम, पार्षद सविता टुटेजा, समाजसेवी शरद बत्रा, ब्र.कु.मोहिनी बहन, ब्र.कु.संगीता बहन, ब्र.कु.मदन भाई तथा अन्य।



सुजानगढ़-राज. 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में 'एक शाम प्रभु के नाम' संगीत संध्या 'संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी विश्व शांति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें परमात्मा शिव का संदेश देने हेतु आयोजित कलश यात्रा को गोपालपुर सरपंच सविता राठी ने हरी झंडी दिखाकर तिरुपति बालाजी मंदिर से खाना किया। इस अवसर पर आयोजित संगीत संध्या में सभापति नीलोफर गौरी, सरपंच सविता राठी, बाबूलाल कुलदीप, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर भाई, मा.आबू, हास्य कलाकार मुरारी लाल पारीक, बॉलीवुड गायक सुखीराम मंडा, रुचि खंडेलवाल, लोडसर की शारदा प्रजापत व अन्य कलाकारों सहित ब्र.कु. विनती बहन, ब्र.कु. सुप्रभा बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. मिनति बहन व अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



कोटद्वार-उत्तराखंड। शिव जयंती महोत्सव के पावन पर्व पर त्रिदिवसीय आध्यात्मिक मेले का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूरी, ओआरसी से ब्र.कु. विधात्री, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।



फरीदाबाद-हरियाणा(से.35)। शिव जयंती के उपलक्ष्य में कलश यात्रा का रिबन काटकर शुभारंभ करते हुए एसएचओ सुरेन्द्र सिंह, से.37, ब्र.कु. सपना बहन, एसएम मिश्रा जी तथा अन्य।



लखनऊ-उ.प्र.। 87वीं शिव जयंती के उपलक्ष्य में शिव ध्वजारोहण करते हुए रॉयल हैप्पी किड्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल मैनेजर प्रकाश सोनी, एस.बी.आई. बैंक मैनेजर शिव कुमार, ब्र.कु.नम्रता, ब्र.कु.वंदना, ब्र.कु.अल्का तथा अन्य।



रोहतक-दिल्ली। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर पी.जी.आई.एम.एस.की वाइस चांसलर डॉ.अनीता सक्सेना को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रक्षा बहन। साथ हैं डॉ.किरण बाला, सीनियर प्रो., ब्र.कु. वंदना बहन तथा अन्य।



अबोहर-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज के राजयोग भवन में त्रिमूर्ति शिव जयंती पर शिव ध्वजारोहण के अवसर पर उपस्थित हैं सीमा सुरक्षा बल सेक्टर हेडक्वार्टर के कमांडेंट एस.के. मिश्रा, नगर निगम के मेयर विमल ठठई, एडवोकेट रमेश शर्मा, डॉ.संजय गुप्ता, डॉ.रितु गुप्ता, एपेक्स क्लब के पूर्व प्रधान राकेश नागौरी, समाज सेविका शकुंतला सोनी, डॉ.कंचन खुराना, राम प्रकाश जंदल, डॉ.अजय मोहन शर्मा, सेवानिवृत्त आयकर अधिकारी बलराम सिंगला, लेखक परिषद प्रधान राज सदीप, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पलता बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन सहित अन्य भाई-बहनें।



राँची-झारखण्ड। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण करते हुए धर्मेन्द्र दीक्षित, संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग, राहुल पुरवार, आई.ए.एस., अपर मुख्य सचिव, उच्च शिक्षा विभाग, सुनील श्रीवास्तव, संयोजक, साई समिति व एम.डी. राँची सीमेंट, स्वामी भवशानंद जी, सचिव, राम कृष्ण मिशन, राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, दीपक श्रीवास्तव, निदेशक, आई.आई.एम. राँची, डॉ. विनोद नारायण, प्रोफेसर, समाज शास्त्र, देवाशीष चक्रवर्ती, उप निदेशक, झारखण्ड एड्स कंट्रोल सोसाइटी, डॉ. रतन गुप्ता, पूर्व आई.ए.एस. तथा अन्य भाई-बहनें।



आगरा-शास्त्रीपुरम। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण कर रैली का शुभारंभ करते हुए बैंक मैनेजर विजय अग्रवाल, शू फैक्ट्री मैनेजर भरत कुशवाहा, जॉनी, ब्र.कु.मधु बहन तथा अन्य।

ब्रह्माकुमारीज़ कर रही मानवीय मन का सकारात्मक परिवर्तन-डॉ. रंजन

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मानवीय मन को सकारात्मक दिशा प्रदान करने का सराहनीय कार्य कर रहा है। आध्यात्मिक रूपांतरण से ही विश्व परिवर्तन संभव है। अध्यात्म हमारी चेतना को जगाने का कार्य करता है। उक्त विचार भारत सरकार के शिक्षा एवं विदेश राज्यमंत्री डॉ. राजकुमार रंजन ने ब्रह्माकुमारीज़ के गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 3ई एजुकेशन (एक्सप्लोरिंग, एक्सपीरिएंस एंड एम्पावरिंग) विषय पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। माननीय मंत्री ने कहा कि यह संस्था भारत की सनातन संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने का मूल कार्य कर रही है। स्वयं को आंतरिक रूप से मजबूत बनाने से हम शिक्षा को एक बेहतर स्वरूप प्रदान कर सकते हैं।

शिक्षा का वास्तविक स्वरूप है विनम्रता

ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि जीवन को उमंग-उत्साह से भरना ही शिक्षा का वास्तविक अर्थ है। इसमें कोई दो राय नहीं कि हमें भौतिक दृष्टि से सम्पन्न



दीप प्रज्वलित करते हुए केंद्रीय शिक्षा एवं विदेश राज्यमंत्री डॉ. राजकुमार रंजन, ओआरसी निदेशिका आशा दीदी, डॉ. नूपुर, डॉ. अशोक, डॉ. संजय झा, व.कु. सुदेश बहन तथा अन्य।

बनना है। लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण है आध्यात्मिक रूप से सशक्त होना। सही अर्थ में विद्वता वो है, जिसमें विनम्रता है। शिक्षाविदों का विशेष कार्य मानसिक स्तर को बेहतर बनाना है। एक अच्छा शिक्षक वही है, जो अपने आदर्श जीवन से दूसरों को सिखाता है।

सच्ची शिक्षा मानव को मुक्ति प्रदान करती है

गुरुग्राम एमटी यूनिवर्सिटी के निदेशक डॉ. संजय झा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एकमात्र विश्वविद्यालय है जो शिक्षा के वास्तविक रहस्य को समझाता है। शिक्षा वही है जो मुक्ति प्रदान करे।

इन्होंने भी रखे अपने विचार

नॉर्थ कैम्पस यूनिवर्सिटी की कुलपति डॉ. नूपुर, दिल्ली यूनिवर्सिटी की विजिटिंग प्रो. डॉ. उमा गुलाटी, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के उप निदेशक डॉ. निखिल कांत, स्टारेक्स यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. अशोक एवं केंद्रीय

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर, गुरुग्राम में...

शिक्षाविदों के लिए हुआ 3ई एजुकेशन कार्यक्रम का आयोजन

दिल्ली, एनसीआर से बड़ी संख्या में शिक्षाविदों ने भाग लेकर लिया कार्यक्रम का भरपूर लाभ

विद्यालय की पूर्व प्राचार्य डॉली अग्निहोत्री ने भी इस मौके पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सुदेश बहन एवं ब्र.कु. रमा बहन ने सबके साथ अपना आध्यात्मिक अनुभव साझा किया। ब्र.कु. नेहा बहन ने राजयोग के अभ्यास से सभी को गहन शांति की अनुभूति कराई। कार्यक्रम का सफल संचालन ब्र.कु. दिव्या बहन ने किया।

महाशिवरात्रि पर मंदिर के प्रतिनिधियों का किया सम्मान

संसार में अंधकार की काली रात्रि प्रकृति के कारण नहीं, मनुष्यों के गलत कर्मों के कारण



मोहाली-पंजाब। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के सुख शांति भवन में मंदिर के प्रतिनिधियों प्रधान, ट्रस्टीज़, सचिव, कार्यकर्ता एवं पुजारियों के लिए आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में शहर के 25 मंदिरों से लगभग 70 भाई-बहनें शामिल हुए। इस मौके पर ब्र.कु. रमा दीदी, संचालिका, रूपनगर सेवाकेन्द्र ने शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट किया एवं परमात्मा पिता की पहचान सभी को दी। ब्र.कु. प्रेम दीदी, निदेशिका, मोहाली रूपनगर सर्किल ने कहा कि संसार में अंधकार की काली रात्रि प्रकृति के कारण नहीं बल्कि मनुष्यों के गलत कर्मों के कारण है। अब हम सब को ही मिलकर इस संसार के डूबे हुए बेड़े को पार लगाना है। उन्होंने कहा कि परमात्मा पिता जो खिचैया है

उसका हाथ पकड़ कर हमें न सिर्फ अपना लेकिन सारे संसार का भी उद्धार करना है। देवी देवताओं का जीवन हमारे सामने आदर्श है, हमें केवल उनकी महिमा नहीं करनी है लेकिन उन जैसा बनना है। साथ ही दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन सीखने के लिए प्रेरित किया। सुनीता नरूला, प्रधान, महिला कोर्तन

महाशिवरात्रि पर...

स्नेह मिलन का हुआ आयोजन

शहर के 25 मंदिरों से लगभग 70 प्रधान, ट्रस्टीज़, पुजारी... हुए शामिल

मंडली, सनातन धर्म मंदिर, फेज 7 ने अपने जीवन का अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस राजयोग और ज्ञान से उन्हें जीवन में बहुत बल मिला है और ब्रह्माकुमारी बहनों के निःस्वार्थ प्रेम से उन्हें जीवन के उतार-चढ़ाव को पार करने में बहुत मदद मिली है। उन्होंने सभी को इस विश्वविद्यालय से जुड़ने का आग्रह किया। ब्र.कु. करमचंद भाई ने सभी का धन्यवाद किया।

महाशिवरात्रि पर बनाये विश्व के सबसे बड़े...

ग्रीटिंग कार्ड को देखने के लिए शहर में उमड़ा जन सैलाब

पुणे-वाणेर(मह.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर विश्व के सबसे बड़े ग्रीटिंग कार्ड द्वारा महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं तथा परमात्म अवतरण का शुभ संदेश दिया गया। इस ग्रीटिंग कार्ड की ऊंचाई 62 फीट और चौड़ाई 46 फीट है। इस ग्रीटिंग कार्ड का उद्घाटन ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने किया। इस अवसर पर ब्र.कु. नथमल भाई, कटक, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर भाई,



डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके, युवा नेता बाबाराजे देशमुख, डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी बहन, डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा बहन आदि उपस्थित रहे। इस ग्रीटिंग कार्ड को ईडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया है। जिसका सर्टिफिकेट एमटीवी स्प्लिट्सविला एक्स3 के विजेता तथा बिग बॉस मराठी सीजन3 के विजेता सुप्रसिद्ध अभिनेता जय दुधा ने अपने हस्तों से राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके एवं डॉ. ब्र.कु. त्रिवेणी बहन को प्रदान किया।

महाशिवरात्रि पर... ओम शांति भवन रंगा ईश्वरीय रंग में

मथुरा-रिफाइनरी नगर(उ.प्र.)।

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति भवन सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कृष्णा दीदी ने बताया कि परमपिता परमात्मा कलियुगी रात्रि को परिवर्तन कर सतयुगी नई दुनिया की स्थापना करते हैं। इसलिए शिव के साथ रात्रि शब्द जोड़ा जाता है। परमपिता परमात्मा शिव विगत 87 वर्षों से ब्रह्मा तन का आधार लेकर जनमानस को राजयोग का ज्ञान



देकर दिव्य गुणों से श्रृंगारित कर रहे हैं। भाजपा जिला अध्यक्ष मधु शर्मा ने संस्था द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना की और इन नैतिक मूल्यों और

आदर्शों की अविरल धारा को हर घर, हर जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। मथुरा रिफायनरी ब्रंदा क्लब की सेक्रेटरी सोनू जोशी और पदाधिकारी डॉ. कविता कैला,

कार्यक्रम में

हर घर की समस्या मोबाइल की लत को दर्शाता 'डिजिटल रावन' नाटक रहा आकर्षण का केंद्र

दामिनी एंड ग्रुप ने दी शिव वंदना पर मनमोहक प्रस्तुतियां

डॉ. बिंदु, डॉ. नमिता, भाजपा महिला कार्यकारिणी की पदाधिकारी डॉ. चारु जैन एवं अन्य पदाधिकारियों ने भी महाशिवरात्रि के पर्व पर सभी को शुभकामनाएं दीं एवं अपने अनुभव साझा किए।